वर्ष-5 अंक-12 दिसम्बर 2015 मूल्य 15

लोक जागृति

पत्रिका

कानूनी मुद्दों पर मुखर बातचीत एवं सामाजिक जन जागरण का मासिक हिन्दी प्रकाशन

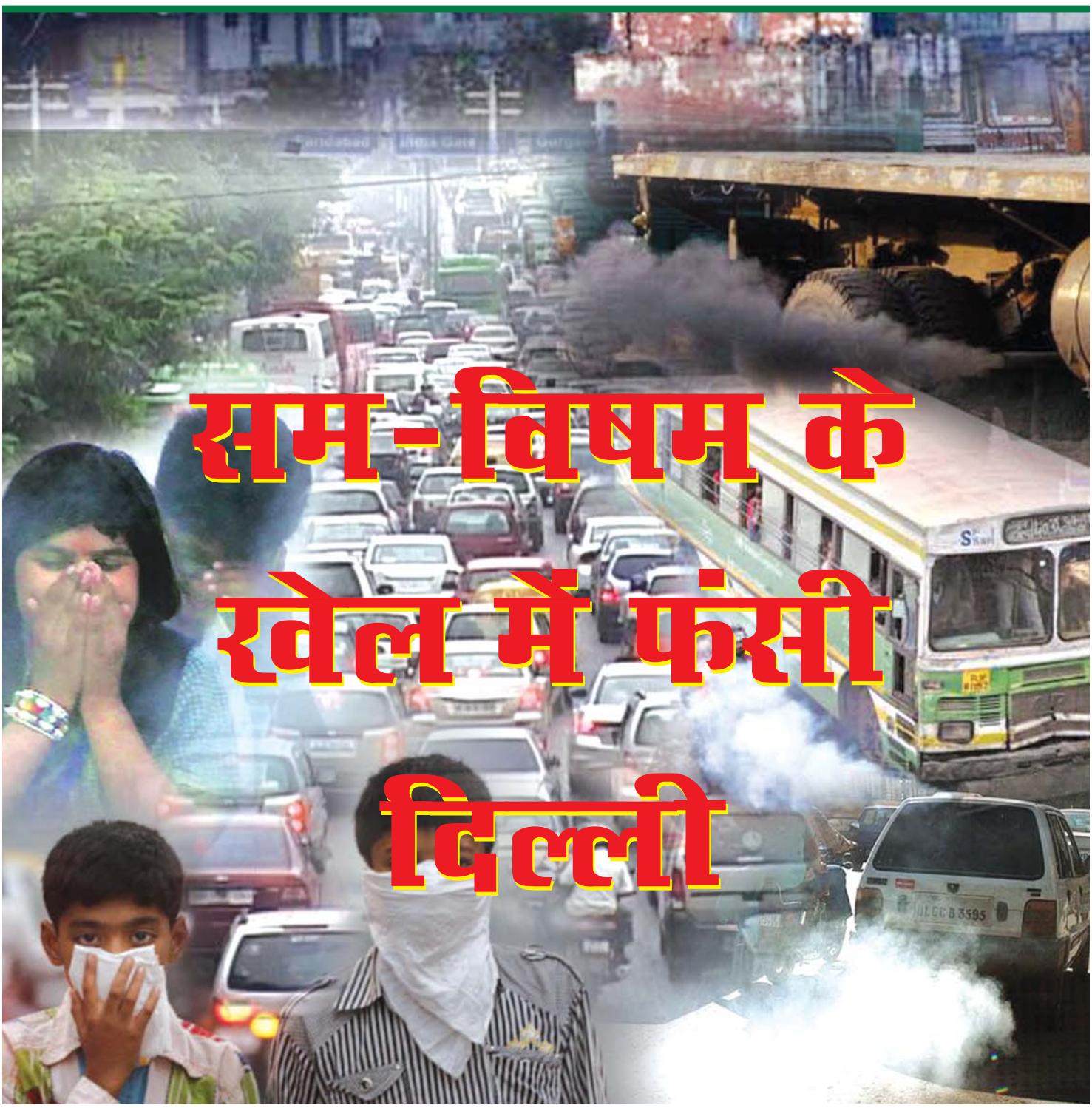

सम-विषम के खेल में फंसी दिल्ली

FIROZ KHAN

9555203713
9582989573
9213622428

GALAXY TILES SHOP

Floor Tiles, Wall Tiles, Bathroom Accessories

ORIENT TILES | Kajaria | asian TILES WORLD

31/5, Sec-2A, Kalpana
Vaishali Ghaziabad.

Email : info@falakinterior.com, shahid.mohd35@gmail.com
Website : www.falakinterior.com

Pepe Jeans LONDON | BAR 3 REAL LIVE MUSIC | BURBERRY LONDON | SuperDry | DIESEL | NIKE | PUMA | ZARA | EMPORIO ARMANI | TOMMY HILFIGER | ck | U.S. POLO ASSN.

More New Brand Available Here

up to 70% OFF

Br@nd Surplus

All Brand Surplus Under One Roof

3A/306, Opp. P.N.B., Sec, 3A Vaishali, Gzb.
Mob. 9990133456

SRA SS Buildtech

White Wash
Tile/Marble Work
Wooden Work
Aluminium/Glass Work P.O.P. Paint
Plumbing Work
Break Work

SRA EARTH DECOR PVT.LTD.

TOTAL CIVIL & INTERIOR

Tel:. 9873181002
9212281002
0120-6521002

Office.: 4/12, Shipra Sun City, Indirapuram, Ghaziabad. (U.P.:201014)
Email: info@sraearthdecor.com
Web : www.sraearthdecor.com

Dr. Narendra Saraswat
(B.D.S. PGDCR)

HITI DENTAL CLINIC

Affordable & Quality Dental Care
SPECIAL DISCOUNT ON DENTAL IMPLANT

ALL DAYS OPEN
FREE DENTAL CHECKUP

CALL FOR APPOINTMENT 9999598080

Add.: 337 (Ground Floor) IIAB, Sec-2, Vaishali

LEGEAZY
INTERNATIONAL

9810960818
info@legeazy.com

FREEDOM OF LIFE

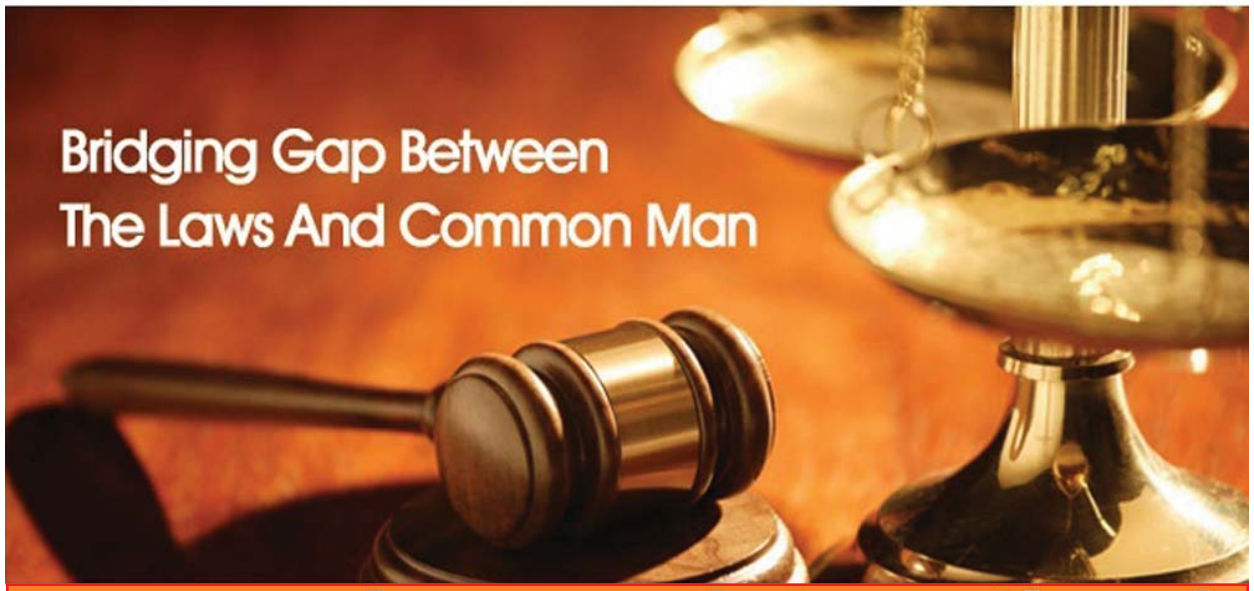

Legeazy International

Off. Add.: - 3A /95 ,Vaishali Ghaziabad, U.P. 201010
Mob. No.:- 9560522777, 9810960818
Email : legeazy@gmail.com | Website : www.legeazy.com

लोक जागृति (NGO)

लोक जागृति की स्थापना श्री स्वामी नारायण जी की प्रेरणा से की गई है। यह संस्था 80G में रजिस्टर्ड है। जिसका निम्नलिखित उद्देश्य है

- वृद्ध आश्रम की स्थापना करना ।
- लोगों को जागृत करने के लिए 'लोक जागृति पत्रिका' का प्रकाशन ।
- लोगों में कानूनी जागरुकता फैलाना ।
- गरीब, विधवा, अनाथ बच्चों एवं असहाय लोगों की सहायता करना ।
- अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों को जागरुक करना ।
- लोगों को अपने कर्तव्य एवं अधिकारों की जानकारी प्राप्त कराना ।
- पर्यावरण सुरक्षा एवं स्वच्छता को प्रोत्साहन देना ।
- धार्मिक जागरुकता फैलाना ।

Lok Jagriti
लोक जागृति

यदि आप संस्था से जुड़ना चाहते है तो सम्पर्क करें
95, सेक्टर 3ए, वैशाली, गाजियाबाद, उ.प्र.
मोबाइल : 9810960818, 0120–4249595 ई मेल : lokjagriti@gmail.com, www.lokjagriti.com

खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।

GARG INVESTMENT CONSULTANTS

INVESTMENT CONSULTANTS & INSURANCE ADVISOR

KIND ATTN INVESTORS

Hurry Please contact immediately for Wealth Creation & Wealth Management

LIC PLANS New Endowment Plan, New Money Back Plans, New Jeevan Anand, Bima Bachat, New Endowment Single Premium Plan where you can gift a plan to a child of 3 months and above for his / her future requirements / education etc. **JEEVAN TARUN, JEEVAN LAKSHYA, Best Plans for children**

PENSION PLANS / ULIP PLANS ALSO AVAILABLE

CAR INSURANCE

GENERAL INSURANCE UNITED INDIA INSURANCE CO. LTD. / IFFCO TOKIO MEDICLAIM POLICY Cash Less with ID CARD House Hold Policy / Shop Keeper Policy **Car / Scooter / Motor Cycle Insurance** / Factory / Flat / Shop / Personal Accident Cover

IFFCO TOKIO / UNITED / APOLLO MUNICH Overseas Mediclaim of TATA AIG available on-line

POST OFFICE SCHEMES	TERM DEPOSITS
MIS Interest Rate 8.4% Monthly	1 Yrs. Interest Rate 8.10%
NSC 5 Yrs. 10000 becomes 15235/-	2 Yrs. Interest Rate 8.20%
NSC 10 yrs. 10000 becomes 23435/-	3 Yrs. Interest Rate 8.30%
	5 Yrs. Interest Rate 8.40%

RD Account (can be opened for any amount)

Rs. 1500/- Deposited per month becomes 111976 in 5 yrs.

MUTUAL FUNDS — All Schemes of PRUDENTIAL ICICI, UTI, LIC, HDFC, SBI, SUNDARAM, HSBC, KOTAK MAHINDRA, BIRLA, TATA, RELIANCE, ING, TEMPLETION, TAURUS MIRAE, PRINCIPAL, IDFC, DWS, CANARA, BOI-AXA, DSP BLACK ROCK, PRAMERICA / RELIGARE

FIXED DEPOSITE OF GOVT. / Pvt. Companies HDFC & MAHENDRA FINANCES, SHRIRAM TRANSPORT etc.

HEALTH INSURANCE / MEDICLAIM OF APOLLO MUNICH. BEST POLICY IN MARKET

Also contact for : Reliance Life Insurance Plans & ICICI Prudential Life Insurance Products.

Also contact for PAN card

Please Contact : M.C. GARG / Poyam Rajvanshi

IInd-B-134, Sector-2, Vaishali, Ghaziabad

Ph.; 2770875, 2777246, Mobile : 9810554425, 9910955606, 9811754425

पाठक के नाम

लोक जागृति (NGO) की स्थापना स्वामी नारायण जी की प्रेरणा से की गई है। स्वामी नारायण जी ने लोक जागृति के लिए सन्यास लिया था। स्वामी नारायण धर्म की स्थापना की और उस के प्रचार प्रसार के लिए अक्षर धाम मन्दिर की स्थापना पूरे, विश्व में कई जगह पर हुई है। दिल्ली के अक्षरधाम मन्दिर का नाम गिनीजबुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज है। स्वामी नारायण का जन्म जिला गोण्डा के छपिया में हुआ था, श्री स्वामी नारायण जी जस प्रेरणा लेकर, लोक जागृति (NGO) की स्थापना की गयी और उसी क्रम मे लोक जागृति पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है। यह पत्रिका लोगों को कानूनी एव अन्य उपयोगी जानकारी के साथ–साथ स्वामी नारायण के लोक जागृति के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए देश के हिन्दी भाषी क्षेत्र में प्रधान एव उपप्रधान को निःशुल्क पत्रिका देती है, और ग्रामीण क्षेत्रों की समस्या को जानने समझने का प्रयास किया जाता है। लोक जागृति द्वारा वृद्धाश्रम, निःशुल्क कानूनी सहायता व सामाजिक अकेक्षण का कार्य किया जाता है जिसके माध्यम से सरकारी विभागों मे कैम्प लगा कर आम जनता से जानकारी ली जाती है कि लोग उनके काम से कितना सन्तुष्ट है। लोक जागृति पत्रिका सामाजिक कार्य करने वाले लोगों को प्रोत्साहित करती है साथ मे सम्मानित भी करती है। हमारा मुख्य उद्देश्य गॉवों मे पत्रिका का वितरण करना तथा वहां के लोगों की आवाज को देश की राजधानी तक पहुंचाना है। जिससे लोगों को फायदा पहुंच सके और लोग अपनी बात सही तरीके से सरकार तक पहुंचा सके। सरकार लो. कहित में सही कार्य कर सके और नीतियां बना सके। लोक जागृति 80G, 12A मे रजिस्टर्ड है। इसकी लोकप्रियता किसानों, गरीब ,पढ़े, लिखे ईमानदार लोगों, छात्रो में है, जो दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हमारे कानूनी जानकारी से सम्बन्धित लेख से लोगों को पुलिस अत्याचार, अवैध वसूली भष्टाचार से लड़ने में महत्वपूर्ण सहयोग मिला है साथ में स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी से लोगो को स्वास्थ्य से सम्बन्धित अच्छी–अच्छी जानकारी मिल रही है। संस्था का प्रबंधन सेवारत एवं सेवानिवृत्त उच्च पदस्थ अधिकारी, एडवोकेट, न्यायाधीश आदि हस्तियों द्वारा किया जा रहा है। अतः निवेदन है कि इस एन. जी.ओ. और मासिक पत्रिका को आप सभी सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें जिसका उपयोग जनता के हित में किया जाना है।

लोक जागृति पत्रिका का सदस्य बनें

सम्पर्क करें : 9560522777

Subal Dass

+91-9211288057
+91-9717957046

New Advance Electrocare

REPAIR, SPAIR & SERVICE

Whirlpool

Washing Machines, Microwave Ovens Air Conditioners, Refrigerators

Haier Inspired Living

BLUE STAR BLUE STAR INFOTECH · DAIKIN · LG · SAMSUNG · Panasonic

Shop No. 148, Sec-3A, Rachna Vaishali, Near Bijli Ghar, Gzb

लोक जागृति पत्रिका

दिसम्बर 2015 वर्ष 5 अंक 12

संरक्षक

कपिल सिंघल

डा. ए.जी. अग्रवाल

संपादक

संतोष कुमार मिश्रा (एडवोकेट)

वित्त सलाहकार एवं सह सम्पादक

नीरज बंसल

समाचार संपादक

बृजमोहन

संपादकीय सहयोगी

सुरेश पाण्डेय

विजय बहादुर सिंह

तेज सिंह यादव (एडवोकेट)

नरेन्द्र कुमार सक्सेना

गिरीश त्रिपाठी

एस.बी.एस. गौतम

सत्येंद्र श्रीवास्तव

अश्विनी मिश्रा (एडवोकेट)

राहुल मिश्र

जगजीत सिंह

कृष्ण कुमार पाण्डेय (एडवोकेट)

राजेश कुमार मिश्र

कमल कांत त्रिपाठी (एडवोकेट)

तरुण गुप्ता (एडवोकेट)

पूनम सिंह (एडवोकेट)

शोभा चौधरी

अनिल कुमार शुक्ला

रजनीश कुमार पाण्डेय

महेन्द्र पाण्डेय (एडवोकेट)

प्रमोद उपाध्याय (एडवोकेट)

मार्केटिंग

दीपक गुप्ता

सर्कुलेशन

संदीप माथुर

साज सज्जा

A.N.R. Creation

9868632759

मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक

संतोष कुमार मिश्र

द्वारा आदर्श प्रिंटिंग हाउस बी 32 महिंद्रा इंक्लेव शास्त्री नगर गाजियाबाद से मुद्रित एवं 3ए 341 वैशाली, गाजियाबाद से प्रकाशित ।

इस पत्रिका में छपे किसी भी लेख से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है । किसी भी विवाद के निराकरण के लिए गाजियाबाद न्यायालय पूर्ण क्षेत्राधिकार व निर्णय मान्य होगा ।

RNI NO.
UPHIN/2011/39809

सम्पादकीय

भारत देश एक मिलीजुली संस्कृति एवं सभ्यता का देश है। यही एक ऐसा देश है जहां पर पशु–पक्षी पेड़ पौधे भगवान की तरह पूजे जाते हैं। भारतीय सांप जैसे विषैले जानवर को भी दूध पिलाना और पीपल और बरगद व तुलसी जैसे पेड़ों को पूजना अपना धर्म समझते हैं। इस रंग बिरंगे भारत में असहिष्णुता जैसी बाते करना बेमानी है। यह तो वास्तव में यह लाइम लाइट में बने रहने व कुछ छपास रोगियों के दिमाग की उपज है फिर चाहे वह कोई नायक हो या कोई खलनायक। इस देश का हजारों वर्षों पुराना इतिहास है यहां मुस्लिमों ने शासन किया, हिन्दुओं ने शासन किया और फिरंगियों ने भी शासन किया और आज भी सभी जाति एवं धर्म के लोग एक साथ एक ही 'मां' की गोद में जी रहे हैं। जो लोग 365 दिन में एक दिन भी समाज को नहीं दे पाते वही समाज के सबसे बड़े ठेकेदार बने हुए हैं। ऐसे ठेकेदारों को देश और समाज से कुछ भी लेना देना नहीं होता। वह बस खुद को चमकाने में लगे होते हैं। इसका जीता जागता उदाहरण है देश में बढ़ता प्रदूषण। देश में प्रदूषण इस कदर बढ़ता जा रहा है लेकिन इसके प्रति इन सामाजिक ठेकेदारों की कोई जिम्मेदारी नहीं बनती? क्या उनकी नैतिक जिम्मेदारी नहीं है कि वह जहर उगलती इंडस्ट्रीज के खिलाफ कुछ आवाज उठाए। देश की राजधानी दिल्ली में जब प्रदूषण बेकाबू हो गया तो सरकार हरकत में आई। आनन–फानन में इनसे निपटने के लिए योजनाएं बनाई जाने लगी। कुछ दिनों का योजनाओं वाला पिटारा खुला तो पता चला कि अगर इन योजनाओं को लागू कर दिया जाए तो हा–हाकार मच जाएगा। फिर इन योजनाओं के पिटारे पर ताला लगाकर रख दिया जाता है।

ठीक इसी तरह भारत वर्षों से आतंकवाद से लड़ रहा है। परंतु जैसा कि अभी पेरिस पर आईएसआईएस का आतंकी हमला हुआ और उसके बाद विश्व बिरादरी आतंकवाद के खिलाफ खुलकर खड़ी हो गई। भारत में जब 26/11 तथा संसद पर हमला होता है तो महाशक्तियों पर या फिर संयुक्त राष्ट्र संघ पर कोई असर नहीं होता है। परंतु जब महाशक्तियों को अपने वजूद पर खतरा नजर आया तो सारे उठ खड़े हुए। क्या आईएसआईएस के आतंक की खबर विश्व बिरादरी को पहले नहीं थी दुनिया का खुफिया विभाग क्या कर रहा था? इसे हथियार और पैसों का इंतजाम कहां से हो रहा था? कौन–कौन देश इन्हें पनाह दे रहे हैं।

शासन का आशय है सरकार की जवाबदेही, उसकी प्रकृति और सीमा तय करना। एक कुशल शासन के लिए जिम्मेदारी तय होना जरुरी है। हमारी व्यवस्था में जिम्मेदारी का अभाव है। ज्यादातर कानून बनाने वाले एवं पालन करने वाले ही कानून को तोड़ते हैं।

जैसा आप सोचते हैं , वैसा आप बन जायेंगे।

सम–विषम के खेल में फंसी दिल्ली

सुरेश पांडेय

दिल्ली में प्रदूषण से लड़ने के लिए केजरीवाल ने विश्वस्तरीय फैसला किया है। इस फैसले के बाद अब सम और विषम के आधार पर ही दिल्ली की सड़कों पर गाड़ियाँ चल सकेंगी। एक दिन सम तो दूसरे दिन विषम नंबर वाली कारें ही सड़कों पर दिखेंगी। केजरीवाल के इस फैसले से कार वालों की हालत खराब हो गयी है। अब उन्हें मजबूरन पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करना पड़ेगा क्यूंकि इस फैसले के बाद वे हफ्ते में केवल तीन दिन ही अपनी कारें घर से बाहर निकाल सकते हैं। ऑफिस जाने के लिए भी उन्हें पब्लिक ट्रांसपोर्ट का ही इस्तेमाल करना पड़ेगा। बता दें कि दिल्ली उच्च न्यायलय ने दिल्ली की तुलना एक गैस चैम्बर से करते हुआ कहा था कि राजधानी में रहना गैस चैम्बर में रहने जैसा हो गया है। हाई कोर्ट की इस टिप्पणी पर केजरीवाल ने तुरंत ही एक आपात बैठक बुलाई और प्रदूषण को कम करने के लिए तुरंत ही बड़ा फैसला ले लिया। हालाँकि दिल्ली सरकार का यह फैसला 1 जनवरी 2016 से लागू होगा। लेकिन इस फैसले ने कार के आदी हो चुके लोगों को परेशान कर दिया है। इस फैसले के बाद अगर आपकी कार की नंबर का अंतिम डिजिट 1 है तो आप की कार पहले दिन तो सड़क पर दौड़ सकेगी लेकिन दुसरे दिन उसे घर पर ही रुकना पड़ेगा। तीसरे दिन फिर से आप अपनी कार को सड़क पर दौड़ा सकते हैं लेकिन चौथे दिन फिर से आपको अपनी कार घर पर छोड़नी पड़ेगी।

सम–विषम संख्या वाली योजना चीन की राजधानी बीजिंग के अलावा सिंगापुर में भी लागू है। वहां एक दिन सम संख्या के वाहन चलते हैं तो अगले दिन विषम संख्या वाले। इस तरह एक वाहन महीने में 15–16 दिन ही चल पाता है।

लोग दिल्ली में 1 जनवरी से रोज अपनी गाड़ियां नहीं चला सकेंगे। हर गाड़ी का नंबर एक दिन छोड़कर आएगा। क्योंकि अरविंद केजरीवाल सरकार ने फैसला किया है कि दिल्ली की सड़कों पर एक दिन सम संख्या (जिनके अंत में 0,2,4,6 और 8 है) वाली गाड़ियां चलेंगी। अगले दिन विषम संख्या (जिनके आखिर में 1,3,5,7,9 है) वाली। राजधानी में प्रदूषण कम करने के लिए यह कदम उठाया गया है।

फैसले के मुताबिक, यह नियम दिल्ली के साथ ही पड़ोसी राज्यों के रजिस्ट्रेशन नंबरों वाले निजी वाहनों पर भी लागू होगा। इमरजेंसी सेवाओं और पब्लिक ट्रांसपोर्ट को इसके दायरे से बाहर रखा गया है। इस फैसले के बाद दिल्ली में रजिस्टर्ड कुल निजी गाड़ियों में से रोज सिर्फ आधी ही सड़कों पर उतर पाएंगी।

पुलिस ने कहा योजना अव्यावहारिक : दिल्ली पुलिस का मानना है कि राजधानी मे बढ़ते प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए केजरीवाल सरकार ने सम और विषम नबंर प्लेट वाली गाडिय़ों को बारी–बारी से चलाने की जो योजना बनाई है वह पूरी तरह अव्यावहारिक है। ट्रैफिक पुलिस के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त शरद अग्रवाल का कहना है कि नंबर प्लेट की इस प्रस्तावित योजना को लागू करने में कई व्यावहारिक दिक्कतें हैं। शुक्रवार को दिल्ली सरकार की ओर से इस योजना की घोषणा पर पुलिस आयुक्त भीमसेन बस्सी ने भी कहा था कि केजरीवाल सरकार ने ऐसा करने से पहले उनसे कोई सलाह लेना जरुरी नहीं समझा।

कोर्ट ने 21 दिसंबर तक मांगा है एक्शन प्लान : दिल्ली हाईकोर्ट ने गुरुवार को दिल्ली और केंद्र सरकार को फटकारा था। उन्होंने कहा था, 'प्रदूषण का मौजूदा स्तर खतरनाक स्थिति में पहुंच गया है। लेकिन जो एक्शन प्लान केंद्र और दिल्ली सरकार ने दिए हैं, उसमें न तो किसी की जवाबदेही तय की गई है और न ही समय सीमा।' कोर्ट ने 21 दिसंबर तक एक्शन प्लान देने को कहा था।

सीएसई (सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरन्मेंट) की डायरेक्टर जनरल सुनीता नारायण समेत पर्यावरण के लिए

- कुछ इलाकों में कार फ्री डे शुरू किया है। एनसीआर में 22 जनवरी को कार फ्री डे रहेगा।
- बदरपुर थर्मल पावर स्टेशन बंद होगा। दादरी (यूपी) का पावर प्लांट बंद करवाने एनजीटी (नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल) जाएंगे।
- 1 अप्रैल से सड़कों की सफाई वैक्यूम क्लीनर से। मुख्य सड़कों पर पौधारोपण किया जाएगा।
- ट्रकों को शहर में प्रवेश की अनुमति को रात नौ के बजाय 10 या 11 बजे के बाद ही दी जाएगी।
- ज्यादातर स्कूल बसें सीमित अवधि के लिए चलती हैं। ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंटध्डीटीसी इन बसों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।
- यूरो–6 मानक 2017 से दिल्ली में लागू होंगे। केंद्र ने इसे 2019 से लागू करना तय किया है।
- बिना पॉल्यूशन अंडर कंट्रोल (पीयूसी) सर्टिफिकेट के वाहन दिल्ली में प्रवेश नहीं कर सकेंगे। यदि पीयूसी के बाद भी वाहन से प्रदूषण होते दिखा तो उसे रोका जाएगा।
- स्वच्छ दिल्ली एप को बदलेंगे। ताकि लोग प्रदूषण के स्रोतों की तस्वीरें पोस्ट कर सके।
- दिल्ली मुख्य सड़कों पर ट्रैफिक स्लो करने वाले एमसीडी के पार्किंग लॉट्स बंद किए जाएंगे।

साख बनाने में बीस साल लगते हैं और उसे गंवाने में बस पांच मिनट।

काम करने वालों ने फैसले का स्वागत किया है। नारायण ने कहा, 'इसे लागू करने की चुनौतियां हैं। लेकिन पब्लिक इमरजेंसी को देखते हुए यह जरूरी था।' सेंटर के सिस्टम ऑफ एयर क्वालिटी एंड वेदर फॉरकास्टिंग एंड रिसर्च (सफर) के चीफ प्रोजेक्ट साइंटिस्ट गुफरान बेग ने भी फैसला अच्छा बताया। उन्होंने कहा, 'कारों की संख्या घटेगी तो प्रदूषण पर तत्काल इसका असर दिखाई देगा।' सीएसई की एक्सपर्ट अनुमिता राय चौधरी ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए बीजिंग और मैक्सिको सिटी में इसी तरह की योजना अमल में लाई गई थी।

पंचों का आदेश सर माथे पर
खूंटा यहीं गड़ेगा...
यानी सब अच्छा परंतु नेता, अधिकारी सभी दिन कारों से ही चलेंगे हो चाहे जो।

दिल्ली के पर्यावरण को बचाने के लिए केजरीवाल की सम–विषम योजना अच्छा कदम : जयराम रमेश

पूर्व केंद्रीय मंत्री जयराम रमेश ने निजी वाहनों के लिए 'सम–विषम' प्रतिबंधों को लागू करने के दिल्ली सरकार के फैसले को अच्छा कदम बताते हुए कहा कि शीला दीक्षित के मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने भी एक बार इसी तरह के कदम का सुझाव दिया था।

रमेश यहां पेरिस में नेशनल असेंबली में आयोजित दो दिवसीय 'ग्लोब कॉप 21 लेजिस्लेटर्स' शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने आए हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि राज्य और केंद्र सरकार के मंत्रियों के वाहनों को भी इस प्रतिबंध का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर इसे गंभीरता से लागू किया गया तो इस फैसले का रचनात्मक प्रभाव होगा।

केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी की जलवायु परिवर्तन पर टिप्पणी के बारे में पूछे जाने पर रमेश ने कहा कि उन्होंने अभी तक उनकी टिप्पणी के बारे में न तो पढ़ा है और ना ही सुना है। बहरहाल, यह तथ्य है कि जलवायु परिवर्तन भारत में एक गंभीर मुद्दा है और इससे निपटने के लिए सख्ती से कदम उठाना चाहिए। मेनका गांधी ने कहा था कि जलवायु परिरवर्तन में मुख्य योगदानकर्ताओं में भारत भी एक है और इस संबंध में और अधिक काम किए जाने की जरूरत है।

जलवायु परिवर्तन की चिंता

जलवायु को लेकर हम कुछ करें न करें, लेकिन जब भी कोई नई कॉलोनी काटते हैं एक जलवायु विहार ज़रूर बनाते हैं। गूगल में आप जलवायु विहार टाइप करेंगे तो लखनऊ, भोपाल, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, फरीदाबाद, गुड़गांव में एक न एक जलवायु विहार मिल ही जाएगा। पर इसका मतलब यह नहीं कि हम जलवायु को लेकर बेहद गंभीर लोग हैं। जब तक हम पंजाब और नियामक गिरी से उठने वाले सवालों को विकास विरोधी मानकर दिल्ली जैसे महानगरों में खुद को महफूज़ समझते हैं तब तक तो कोई बात नहीं, लेकिन जैसे ही पता चलता है कि दिल्ली की हवा सांस लेने लायक नहीं रही और हमारे फेफेड़ ख़राब हो रहे हैं तब भी हम यही समझते हैं कि पर्यावरण के सवाल का संबंध हमसे नहीं शायद पर्यावरण मंत्री या प्रधानमंत्री से ही जुड़ा हुआ है।

दिल्ली की हवा ने ख़राब होने में बीजिंग की प्रदूषित हवा को पीछे छोड़ दिया है। बीजिंग में मां–बाप ने अपने बच्चों को स्कूल जाने से मना कर दिया, बहुत सारी फैक्ट्रियां बंद कर दी गईं, लेकिन दिल्ली ने ऐसा कुछ नहीं किया। जबकि दिल्ली की हवा बीजिंग से कई गुना ज्यादा ख़राब है। दिल्ली के बच्चे स्कूल गए, जिसे काम पर जाना था वो गया ही। प्रदूषण के कारण हवा में धुंध इतनी गहरा हो गई कि 200 मीटर से ज्यादा दूर की चीज़ें नज़र नहीं आ रही थीं। एयर क्वालिटी इंडैक्स में अगर 400 प्वाइंट पार कर जाए तो हवा ख़तरनाक कही जाने लगती है।

पश्चिमी दिल्ली के पंजाबी बाग की हवा ने टॉप किया है। पूर्व में आनंद विहार की हवा जो कि खराब होने के मामले में कई दिनों से टॉप चल रही थी, आज पंजाबी बाग से हार गई। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2014 में बताया था कि दुनिया के ऐसे बीस शहरों में जिनकी हवा सबसे प्रदूषित हैं हमारी दिल्ली चोटी पर है। दिल्ली के साथ 12 शहर भी इस टाप 20 में आते हैं। कायदे से पेरिस जैसा सम्मेलन दिल्ली शहर में हो जाना चाहिए था। दो दशक पहले जब दिल्ली की हवा में ज़हर फैला था, तब सीएनजी को लेकर कितना कुछ हुआ था, अब लगता है कि कुछ होता ही नहीं। फिर भी कुछ संगठन कुछ वकील इसे लेकर अपने स्तर पर लड़ाई लड़ रहे हैं। लोक जागृति भी इस संबंध में कार्य कर रही है व आने वाले दिनों में पीआईएल की तैयारी कर रही। **(कमल कांत त्रिपाठी)**

प्रधानमंत्री राहत कोष का दुरुपयोग

(एडवोकेट) तरुण गुप्ता

बहुत सारे अस्पतालों को कैंसर पीड़ितों की सहायता के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष से फंड दिया जाता है जिसमें अस्पतालों द्वारा काफी हेर फेर किया जाता है कभी मरीज के नाम से आया हुआ रुपया कहा जाता है कि वापस कर दिया गया कभी वह इतने बाद में आता हैं कि तो सारा इलाज हो जाता है या मरीज मर जाता है और इसी घालमेल में अस्पताल प्रधानमंत्री राहत कोष से आया पैसा हजम कर जाते हैं।

लोक जागृति को एक इसी तरह का मामला संज्ञान में आया तो इसकी तह तक जाने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय को आरटीआई डाल कर पूछा गया लेकिन जैसा कि सरकारी विभाग का काम होता है किसी तरह से सूचना न देना और बहाना बनाना, बना दिया गया है

प्रधानमंत्री राहत कोष भी राष्ट्र की सम्पत्ति है और जनहित में लोगों को जानने का हक है कि कितना पैसा किसको कब दिया गया? कितना उपयोग हुआ ? और कितना वापस हुआ और कब? लेकिन इसका कोई हिसाब किताब ही नहीं होता है। और इसका फायदा कई अस्पताल उठा रहे हैं और धड़ल्ले से यह गोरखधंधा चल रहा है।

आवश्यकता है

निर्भीक संवाददाताओं और विज्ञापनदाताओं की। आप पत्रकार हैं, मगर आपकी खोजी रिपोर्ट दबाई जा रही है तो हमें भेजें।

लोक जागृति पत्रिका

95, सेक्टर 3ए, वैशाली, गाजियाबाद, उप्र

9810960818

lokjagriti@gmail.com

Suresh pandey **Mob-9810514888**

INDIAN/FOREIGN BOOKS, JOURNALS NEW/OLD (LAW BOOKS), BACK VOLUMES & SUBSCRIPTIONS SUPPLIER

(SK)

SK ACADEMIC PUBLISHING PVT.LTD

E-252/4, West Vinod Nagar, Delhi-110092
Email: - suresh66pandey@gmail.com
pandeysureshk@gmail.com

विचार एवं भावना की शक्ति

सत्येंद्र श्रीवास्तव

इस संसार में हर एक व्यक्ति विचारों और भावना से बंधा है। विचार और भावना से वशीभूत होकर ही वह कर्म करता है। अगर यही दृढ़ नहीं हो तो वह असफल हो जाता है। अतः इन्हें कैसे शक्तिशाली बनाए अब यही प्रश्न उठता है। मेरा अनुभव तो यही है अगर आप रात्रि में सोने से पहले अपने इष्ट का ध्यान करे और इससे प्रार्थना करे कि वह आपके अमुक विचार और भावना में शक्ति का संचार करें। आप कुछ समय लगभग 3–4 हफ्ते में यह महसूस करेंगे कि आपके विचारों और भावना में दृढ़ता आने लगी है और आपका मन और शरीर उसी दिशा की तरफ कार्य करने लगे हैं। यह नियम सभी जगह कार्य करता है फिर चाहे वह आपका व्यक्तिगत क्षेत्र हो अथवा आपका कोई भी कार्य क्षेत्र हो। आवश्यकता यही है कि आप निश्चय कर ले कि आप किसी विचार और भावना को बल देना चाहते हैं। शर्त यही है कि आप रोज प्रार्थना करके सोने जाएं।

लोक जागृति की 20 सूत्रीय मांग

1. बेरोजगार को रोजगार प्रदान कराना।
2. सभी को उचित चिकित्सा सुविधा प्रदान कराना।
3. आरक्षण का आधार आर्थिक हो।
4. पुलिस व्यवस्था में सुधार हो।
5. अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कार्य एवं योग्यता का प्रत्येक दस वर्ष में उनके प्रदर्शन का मूल्यांकन होना चाहिए।
6. एक निश्चित समय में न्याय निर्णय की व्यवस्था करना।
7. भारतीय न्यायालयों में भारतीय भाषा में कार्य करने की स्वतंत्रता हो।
8. शिक्षण संस्थान एवं चिकित्सा व्यवस्था पर सरकार का नियंत्रण हो।
9. सांसद व विधानसभा में पार्टी व्यवस्था समाप्त कर लोक. हित में काम करना।
10. सामाजिक सोशल आडिट की व्यवस्था करना।
11. लाभ के पद पर बैठे लोगों की सब्सिडी बंद करना।
12. बड़े नोट 500, 1000 रुपए के नोटों का चलन बंद होना।
13. हर वस्तुओं एव सेवाओं की लागत अंकेक्षण कराना और वस्तुओ के पैकेट पर लागत मूल्य लिखना।
14. भारतीय दण्ड संहिता में सुधार झूठे केस दर्ज कराने एवं करने पर कार्यवाही करना या कुछ दण्डात्मक कार्यवाही ।
15. समान शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था करना।
16. देश के प्राकृतिक संसाधनो पर सरकार का अधिकार होना चाहिए।
17. सीलिंग लिमिट जैसे कृषि भूमि पर उसी तरह शहरी क्षेत्र में भी होनी चाहिए।
18. कराधान एवं लाइसेंसी प्रक्रिया को सरल एवं स्पष्ट करना। लाल फीता शाही खत्म करना।
19. गरीबों की सही पहचान और उन्हे निःशुल्क कोई चीज न दे कर उन्हें रोजगार परक बनाना एव स्वावलम्बी बनाने का कार्यक्रम बनाना।
20. टोल टैक्स समाप्त करना।

खुश रहो लेकिन कभी संतुष्ट मत रहो।

सुप्रीम कोर्ट ने पुलिस मुठभेड़ पर दिशानिर्देश जारी किए

पुलिस एनकाउंटर पर सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि हर एनकाउंटर की तुरंत एफआईआर दर्ज हो और जब तक जांच चलेगी, तब तक संबंधित पुलिस अधिकारी को कोई पदोन्नति या गैलेंट्री अवॉर्ड नहीं मिलेगा। इसके अलावा पुलिस मुठभेड़ के सभी मामलों की जांच सीबीआई या सीआईडी जैसी स्वतंत्र एजेंसी से कराई जानी चाहिए। अदालत ने पुलिस मुठभेड़ के मामलों को लेकर दिशानिर्देश जारी किये। इनके मुताबिक जब तक यह साबित नहीं हो जाता कि मुठभेड़ सही थी, इसमें शामिल पुलिस अफसरों को कोई प्रमोशन नहीं दिया जाएगा। मुठभेड़ की घटना पर तत्काल एफआईआर दर्ज होनी चाहिए और सभी मामलों की मजिस्ट्रेटी जांच हो। फैसले में यह भी कहा गया है कि पुलिसवालों को अपराधियों के बारे में मिली सूचना को रिकॉर्ड कराना होगा और हर एनकाउंटर के बाद अपने हथियार और गोलियां जमा करने होंगे। अदालत के निर्देशों के मुताबिक पुलिस मुठभेड़ के सभी मामलों में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग दखल नहीं देगा, जब तक इस बात की पूरी आशंका हो कि एनकाउंटर फर्जी था। पुलिस मुठभेड़ के मामले में एफआईआर दर्ज कर इसे तत्काल मजिस्ट्रेट को भेजना होगा। अगर पीड़ित पक्ष को लगता है कि एनकाउंटर फर्जी था तो वह सत्र न्यायालय में मुकद्दमा दर्ज करा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने पुलिस एनकाउंटर पर एक याचिका पर सुनवाई करते हुए ये व्यापक दिशानिर्देश जारी किए जिन्हें धारा 144 के तहत एक कानून माना जाएगा। **प्रमोद उपाध्याय**

जीएसटी कानून की खामियां

तेज सिंह यादव

राजनीतिक आग्रहों से किए गए निम्न समझौतों की वजह से जीएसटी का प्रस्तावित कानून न तो जीडीपी में विशेष वृद्धि ला पाएगा, न अर्थव्यवस्था की सेहत को दुरुस्त कर पाएगा ।

वर्तमान में पेट्रोल–डीजल की कीमतें सभी राज्यों में अलग–अलग हैं, और यही हाल शराब का है। जीएसटी लागू होने के बाद भी फिलहाल ऐसा जारी रहेगा। पेट्रो पदार्थों पर सरकार ने निर्णय लिया है कि ये रहेंगे तो जीएसटी के अंदर, लेकिन इन पर राज्य पहले की तरह टैक्स वसूलते रहेंगे। यानी पेट्रोल, डीजल और एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में राज्यों में जो अंतर देखने को मिलता है, वह बरकरार रहेगा। इसी तरह राज्यों के दबाव पर केंद्र सरकार शराब को भी जीएसटी से बाहर रखने पर राजी हो गई है।

जीएसटी की सबसे बड़ी खामी यह है कि असंतुष्ट राज्यों द्वारा बिना टैक्स संशोधनों के पुराने टैक्स नियमों को बिना जीएसटी के भी चालू रखा जा सकता है। दिल्ली जैसे केंद्रशासित राज्य में देश सरकारों का संघर्ष देख रहा है। जीएसटी पर रोज ऐसे संघर्ष होंगे और राजनीतिक दुराग्रहों के काल में इन्हें सुलझा न पाने की कीमत आम जनता को चुकानी पड़ेगी।

सरलता का दावा करने वाली जीएसटी कर व्यवस्था में केंद्र और राज्यों में छह तरह के कुल आठ फॉर्म भरने पड़ेंगे।

राज्य सरकारों को नए अप्रत्यक्ष कर लगाने की छूट नहीं होगी, जिससे उनके राजस्व स्रोतों में कमी आ जाएगी, जिससे आर्थिक संकटों, बाढ़–सूखा तथा सामाजिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में बड़ा गतिरोध हो सकता है।

अगर करों की दरों को संविधान संशोधन कानून का हिस्सा बना दिया गया तो भविष्य की गठबंधन सरकारों में परिवर्तन मुश्किल हो सकता है, जिसकी कीमत पूरे देश को चुकानी पड़ सकती है।

जीएसटी के खतरे और आशंकाएं : जीएसटी में दरों को कम करने के नाम पर सरकार द्वारा कॉरपोरेट टैक्स की दरों को 30 प्रतिशत से 25 प्रतिशत में लाकर कारोबार जगत के बड़े व्यापारियों को राहत देने का प्रबंध पहले ही कर दिया गया है, जिससे न सिर्फ कर–राजस्व में कमी आएगी, वरन आर्थिक विषमता भी बढ़ेगी।

मोदी सरकार द्वारा एफआईआई (विदेशी निवेशकों) के 42 हजार करोड़ से अधिक की टैक्स डिमांड को माफ करने और भविष्य में टैक्स न लगाने के अनुबंधों को लागू कर विदेशी निवेशकों के लिए अनुकूल आर्थिक माहौल प्रदान किया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त एसआईटी की अनुशंसाओं के बावजूद इनकी जवाब. देही तय नहीं होने से काले धन की अर्थव्यवस्था के विशाल स्रोत पर लगाम लगाना मुश्किल होगा।

15–20 लाख रुपये का व्यापार करने वाले छोटे व्यापारी भी जीएसटी के दायरे में आकर हिसाब–किताब रखने को मजबूर होंगे, जो इन सुधारों का पुरजोर विरोध और असहयोग करेंगे।

सातवें वेतन आयोग की सिफारिशों को मानने से केंद्र सरकार की आय का 55 फीसदी और राज्यों की आय का 70 फीसदी से अधिक सरकारी अधिकारियों के वेतन और पेंशन में ही खर्च हो जाएगा, और राज्यों के पास बिजली बोर्डों के बकाया देने के पैसे भी नहीं है।

जीएसटी के माध्यम से करों में कटौती से राज्यों के राजस्व में कमी होने से राज्य कम आमदनी के बाद कैसे अपनी वित्तीय व्यवस्था को सफल रख पाएंगे, यह एक बड़ा प्रश्नचिह्न है। इससे क्षेत्रीय असंतुलन और अपराध बढ़ेंगे।

बिजली, रियल एस्टेट, पेट्रोलियम

और शराब जैसे महत्वपूर्ण सेक्टरों को जीएसटी से बाहर रखने से करों की बहुलता जारी रहेगी, जिसके चलते तथाकथित सुधारों का कोई लाभ नहीं मिलेगा।

आधे–अधूरे सुधारों से विदेशी निवेशकों का उत्साह भंग होगा और घरेलू उत्पादकों की प्रतिस्पर्धी स्थिति को भी नुकसान पहुंचेगा।

राज्यों द्वारा जीएसटी के माध्यम से समानांतर व्यवस्था खड़ी करने से रोजगार तथा कर प्रणाली में सुधार और भी मुश्किल हो सकता है।

राजनैतिक रस्साकशी के बीच जीएसटी के अधूरे सुधारों से देश में 'वित्तीय नक्सलवाद' पैदा हो सकता है, जहां छोटे और मध्यम उद्योगों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है।

क्या जीएसटी महंगाई बढ़ाएगा... ? : मोदी सरकार के पहले दो बजट अप्रत्यक्ष करों से भरपूर रहे हैं। सरकार को सोचना पड़ेगा कि क्या मंदी से जूझती अर्थव्यवस्था अप्रत्यक्ष करों की इतनी मार झेल सकती है और क्या टैक्स राज के जरिये महंगाई की आंच बढ़ाकर सरकार अपने लिए राजनैतिक मुसीबत नहीं न्योत रही...? शुरुआती तीन सालों में जीएसटी महंगाई बढ़ाने वाला टैक्स साबित होगा, जैसा मलेशिया और अन्य देशों के उदाहरणों से स्पष्ट है। अभी हम सारी सेवाओं पर लगभग 14.5 फीसदी सर्विस टैक्स दे रहे हैं, जो जीएसटी लागू होने पर 18 से 22 के बीच हो जाएगा, जिसका प्रभाव पिक्चर के टिकट, होटल का बिल, बैंकिंग सेवा, यात्रा टिकट इत्यादि पर पड़ेगा, जिससे आम लोगों पर महंगाई की मार पड़ेगी।

लोगों को मोदी सरकार का सेस–राज चिंतित कर रहा है। नवंबर में लागू स्वच्छ भारत सेस के साथ अब लगभग 27 सेस या उपकर देने पड़ते हैं। यदि सरकार जीएसटी के जरिये कारोबार को आसान करने का दावा कर रही है तो यह सेस उन दावों के बिल्कुल उलट है, क्योंकि सेस राज से कारोबारियों के लिए कर नियमों के पालन की लागत (कम्प्लायन्स कॉस्ट) बुरी तरह बढ़ती है। जीएसटी को लागू करने के लिए प्रौद्योगिकी ढांचा, सॉफ्टवेयर और नई कर व्यवस्था के पालन में छोटे व्यापारियों और आम लोगों को शुरुआत में अतिरिक्त निवेश करना पड़ सकता है, जो महंगाई के साथ–साथ परेशानियां भी बढ़ाएगा।

इस आलेख में व्यक्त किए गए विचार लेखक के निजी विचार हैं। इस आलेख में दी गई किसी भी सूचना की सटीकता, संपूर्णता, व्यावहारिकता अथवा सच्चाई के प्रति कोई उत्तरदायी नहीं है।

गुजारा भत्ता पाने का हक पति से, ना कि उसकी कंपनी से

दिल्ली हाईकोर्ट की न्यायमूर्ति प्रतिभा रानी की खंडपीठ ने एक महिला की उस याचिका पर सुनवाई करने से इन्कार करते हुए टिप्पणी की कि घरेलू हिंसा अधिनियम के तहत पत्नी को पति से अलग रहने पर गुजारा भत्ता व अन्य खर्च हासिल करने का अधिकार है, मगर उसे इन सब सुविधाओं की मांग पति की कंपनी से करने का अधिकार नहीं है। याचिका में महिला ने पति की सेवानिवृति के बाद मिलने वाली सुविधाओं पर रोक लगाने की मांग दिल्ली जल बोर्ड व दिल्ली हाईकोर्ट से की थी। इसके बाद महिला ने हाईकोर्ट के रुख को देखते हुए याचिका को वापस ले लिया। खंडपीठ ने महिला को याचिका वापस लेने की अनुमति देते हुए मामले का निपटारा कर दिया है। खंडपीठ ने कहा कि पति–पत्नी के बीच चल रहे झगड़े में पति की कंपनी या सरकारी विभाग को पक्षकार नहीं बनाया जा सकता। एक व्यक्ति जिस जगह पर नौकरी कर रहा है, वहां से प्राप्त होने वाली राशि पर उसी व्यक्ति का अधिकार है। यह राशि

उस व्यक्ति की पत्नी सीधे तौर पर अपने लिए नहीं मांग सकती। मौजूदा मामले में महिला ने पति की सेवानिवृति सुविधाओं पर रोक लगाने की मांग की है। इस मांग को स्वीकार नहीं किया जा सकता।(सं.)

बेटी होने पर डिलीवरी फीस नहीं लेता डॉक्टर

पुणे। भ्रूण हत्या को रोकने के लिए पुणे के डाक्टर ने एक सराहनीय कदम उठाया है। डाक्टर गणेश राख नाम का यह डाक्टर कन्या के जन्म लेने पर मां या उसके परिवार से डिलीवरी फीस नहीं लेता। किसी भी मां की कोख से अगर कन्या जन्म लेती है तो उसका खर्चा और डाक्टर की फीस अस्पताल देता है। यही नहीं कन्या के जन्म लेने के बाद अस्पताल में मिठाईयां बांटी जाती हैं।पूणे के मेडीकेयर मल्टीस्पेशियलिटी अस्पताल में यह सिलसिला शुरु हुआ। जानकारी के अनुसार डाक्टर गणेश राख कन्या के जन्म लेने पर उसके परिवार के मायूस हो जाने से दुखी थे। डाक्टर के मुताबिक किसी परिवार को यह कहना कि उनके यहां लड़की हुई है किसी की मौत की खबर देने जितना ही कठिन था। यही कारण है कि डॉक्टर ने यह कदम उठाया ताकि परिवार वाले घर में कन्या के आगमन पर खुश हों। डॉक्टर का मानना है कि यह कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए उठाया गया एक छोटा सा कदम है।(एजेंसी)

गन्ने की खेती छोड़ रहे हैं किसान

इस बार चीनी मिलों ने लगभग दो हफ्ते की देरी से पेराई शुरू की है, जिसके चलते गन्ना किसानों को अपना गन्ना कोल्हू मालिकों को औने–पौने दाम पर बेचना पड़ा है। कोल्हू मालिक किसान को नगद पेमेंट करते हैं इसलिए मजबूरन किसान उन्हें सस्ते दाम पर गन्ना बेच रहे हैं।

दूसरा कारण यह भी है कि पेराई में देरी होने के कारण फसल देर तक खड़ी रहती है, जिससे खेत खाली नहीं हो पाता है। खेत समय से खाली नहीं हुआ तो रबी की बुआई नहीं हो पाती और दोहरा नुकसान उठाना पड़ता है। किसान की यह विवशता सरकारें और चीनी मिल मालिक बखूबी समझते हैं। पेराई में देरी इसीलिए की जाती है, ताकि मिलें औने–पौने दाम पर गन्ना खरीद सकें।

मिलों पर मेहरबानी : एसोचैम की एक रिपोर्ट बताती है कि किसान बढ़ते कर्ज, चीनी मिल मालिकों से लगभग 4700 करोड़ रुपये का पिछला भुगतान न होने और गन्ने का उचित मूल्य न मिलने के कारण दूसरी फसलों की ओर मुड़ रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान पेराई सत्र में 2.70 करोड़ टन चीनी उत्पादन की उम्मीद है, जबकि पिछले साल 2.83 करोड़ टन उत्पादन हुआ था। चीनी उत्पादन में गिरावट और आक्रामक चीनी निर्यात नीति के कारण अगले साल गर्मियों तक चीनी की घरेलू कीमतों पर दबाव बढ़ सकता है। ऐसा हुआ तो उपभोक्ता को दाल और खाद्य तेल के बाद चीनी भी महंगे दाम पर खरीदनी पड़ेगी।

सरकार ने मिल मालिकों के इस तर्क को तरजीह दी है कि चीनी उत्पादन में उनकी लागत 37 रुपये प्रति किलो आती है, मगर उन्हें बाजार में इसे 28–29 रुपये किलो के भाव से बेचना पड़ता है। मिल मालिकों का मुनाफा सुनिश्चित करने हेतु सरकार समय–समय पर कदम उठाती रही है, परंतु किसानों को लागत मूल्य देने से हमेशा परहेज किया है। हालिया प्रस्ताव के तहत इस वर्ष मिल मालिकों द्वारा उचित एवं लाभकारी मूल्य यानी एफआरपी में केवल 182.50 रुपये ही किसानों को दिए जाने की योजना है। अब तक पूरा दाम मिल मालिकों द्वारा वहन किया जाता रहा है। केंद्र सरकार अपनी नई घोषणा के जरिये चीनी मिल मालिकों का बोझ साझा करने को तैयार दिखी है, लेकिन गन्ने के दाम बढ़ाकर किसानों को राहत देने को वह कतई राजी नहीं है। पिछले दो वर्षों से गन्ने का भाव सिर्फ 10–10 रुपये प्रति क्विंटल की दर से बढ़ाया गया है जबकि चीनी मिलों को सरकार द्वारा एकमुश्त 47.50 रुपये प्रति क्विंटल की राहत दी जा रही है।

इससे पहले वर्ष 2013–14 में भी सरकार द्वारा रॉ शुगर के निर्यात पर सब्सिडी का प्रबंध किया गया था। पिछली सरकार द्वारा भी चीनी मिल मालिकों को रियायत के रूप में एंट्री टैक्स तथा बिक्री टैक्स में छूट देकर लगभग 11 रुपये प्रति क्विंटल की वित्तीय सहायता प्रदान की गई थी। मौजूदा सरकार के अब तक के कार्यकाल में किसानों के हित में कोई बड़ा कदम नहीं उठाया है।

किसानों को एमएसपी के साथ 50 फीसदी लाभकारी मूल्य देने के अपने चुनावी वादे से वह पहले ही मुकर चुकी है। वित्त मंत्री जीएसटी पर आम सहमति बनाने के लिए तमाम राजनैतिक दलों के दरवाजे खटखटा रहे हैं। उसी तर्ज पर एमएसपी का अपना वादा पूरा करने के लिए भी वे कुछ क्यों नहीं करते।

सरकार को सूखाग्रस्त राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक तुरंत बुलानी चाहिए। 320 से अधिक जिले सूखे की लपेट में हैं। राहत प्रदान करने की प्रक्रिया लगभग ठप है। राज्य सरकारों की निष्क्रियता को दोषी बताकर केंद्र सरकार पल्ला झाड़ना चाहती है। किसान समर्थक संगठनों की क्षीण होती शक्ति तथा राजनैतिक दलों में किसान वर्गों का घटता प्रतिनिधित्व भी उनके वर्ग हितों की उपेक्षा का बड़ा कारण है। उत्तर भारत में कभी चौ. चरण सिंह का संगठन और बाद में भारतीय किसान यूनियन हर साल किसानों, खासकर गन्ना किसानों के मुद्दों पर संघर्ष छेड़ते थे। उनकी अनुपस्थिति से इन वर्गों की लड़ाई और कमजोर हुई है।

(लेखक जेडीयू के राज्यसभा सांसद केसी त्यागी)।

गोण्डा में नकली कीटनाशक दवाओं की भरमार

गोण्डा एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश में सूखा एवं मौसमी प्रकोप झेल रहे किसानों को नकली कीटनाशक दवाओ से परेशान होना पड़ रहा है। शासन एवं प्रशासन की मिली भगत से यह धंधा जोरों पर चल रहा है। समय रहते अगर इस पर उचित कार्रवाई नहीं की गई तो किसानों की फसल के साथ–साथ किसान भी बर्बाद हो जाएंगे।

अनिल शुक्ला

अच्छे इंसान सिर्फ और सिर्फ अपने कर्मों से पहचाने जाते हैं।

अदालत, मकान मालिक को निर्देश नहीं दे सकती

सुप्रीम कोर्ट ने व्यवस्था दी है कि अदालत, मकान मालिक को इस बात का निर्देश नहीं दे सकती है कि उसे अपने मकान के किस हिस्से का वाणिज्यिक और किस हिस्से का रिहायशी उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करना चाहिए। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के आदेश के खिलाफ मकान मालिक उदय शंकर उपाध्याय की अपील को स्वीकार करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने यह बात कही।

खण्डपीठ ने कहा कि यह सुविदित है कि दुकानें और अन्य व्यावसायिक गतिविधियां सामान्यतः भूतल पर ही संचा. लित की जाती हैं ताकि उपभोक्ता आसानी से वहां पहुंच सके लेकिन इसके बावजूद अदालत मकान मालिक को यह निर्देश नहीं दे सकती है कि वह अपनी व्यावसायिक गतिविधियां किस तल पर संचालित करे। यह तय करने का हक पूरी तरह मकान मालिक को है।(सं.)

अस्पतालों को उपचार की जरुरत

नीरज बंसल

अस्पतालों में मरीज का उपचार होता है लेकिन आज के हालात में अस्पताल ही बीमार हो गए हैं और ऐसी स्थिति में वह मरीजों का कैसे उपचार करें जबकि उन्हें खुद उपचार की जरुरत है। इसका प्रमुख कारण है सरकारों का सुस्त होना और भ्रष्टाचार। अस्पतालों में बढ़ रहे भ्रष्टाचार के जड़ तक जानने की जरुरत है। सर्वप्रथम अगर किसी को डाक्टर बनना है तो सामान्यतः उसको एक से डेढ़ करोड़ रुपए खर्च करने पड़ेंगे। पढ़ाई इतनी महंगी डोनेशन इतनी ज्यादा है कि सरकारी कालेज में एडमिशन में इतनी धांधली है कि कोई भी पेपर बिना लीक हुए रहता ही नहीं और पेपर लीक के मामले में उच्चतम न्यायालय ने एक पूरी परीक्षा ही रद्द कर दी। दोबारा परीक्षा कराने का आदेश दिया। यही नहीं कि डाक्टर बनने की भ्रष्टाचारी प्रक्रिया। जब कोई डाक्टर बन गया तो उसे अपना खर्चा तो निकालना है और किसी बड़ी नामी अस्पताल में तभी उसे रखा जाएगा जब वह उसकी आमदनी बढ़ाए अब उस अस्पताल की आमदनी बढ़ाने के लिए उसे चाहे मृत्यु के बाद भी दो चार दिन तक

मरीज को वेन्टिलेटर पर रखना हो, अनावश्यक जांच करनी हो, बिना आपरेशन के आपरेशन करना हो इत्यादि। जहां तक जांच का विषय है इसमें भी अच्छा धंधा है मनचाहा दाम है सिर्फ कमीशन का काम है। बाकी दवाओं की तो एक रुपए की दवा सौ रुपए में बिक रही है, दवा माफियाओं का सभी जगह जुगाड़ है। यहां तक कि 2015 में ही 2016 की बनी दवाएं मार्केट में उपलब्ध है।

चिकित्सा बीमा द्वारा अस्पतालों की धन उगाही और आसान हो गई है। बीमा की सीमा तक का यह प्रवेश के समय ही बिल बना देते हैं, उसके बाद नगद एवं जेवर बिकने की बारी आते–आते दूसरे अस्पताल में रेफर कर देते हैं जहां पर कर्ज एवं घर जमीन बिकने तक उपचार किया जाता है। इस तरह हमारे अस्पताल बीमार हैं उन्हें सरकारों द्वारा उपचार की जरुरत है यानी सुधार की जरुरत है जो सरकारी स्तर पर ही ईमानदारी से किया जाए तभी संभव है।

सरकारी अस्पताल में डाक्टर एवं दवाओं पर जितना खर्च होता है और जितने लोगों का इलाज होता है उसकी यदि ईमानदारी से जांच कराई जाए तो वह प्राईवेट से भी महंगा पड़ता है।

'असहिष्णुता'

तूने कहा, सुना हमने अब मन टटोलकर सुन ले तू,
सुन ओ आमीर खान, अब कान खोलकर सुन ले तू,
तुमको शायद इस हरकत पे शरम नहीं आने की,
तुमने हिम्मत कैसे की जोखिम में हमें बताने की
शस्य श्यामला इस धरती के जैसा जग में और नहीं
भारत माता की गोदी से प्यारा कोई ठौर नहीं
घर से बाहर जरा निकल के अकल खुजाकर पूछो
हम कितने हैं यहां सुरक्षित, हम से आकर पूछो
पूछो हमसे गैर मुल्क में मुस्लिम कैसे जीते हैं
पाक, सीरिया, फिलस्तीन में खूं के आंसू पीते हैं
लेबनान, टर्की, इराक में भीषण हाहाकार हुए
अल बगदादी के हाथों मस्जिद में नर संहार हुए
इजरायल की गली गली में मुस्लिम मारा जाता है
अफगानी सडकों पर जिंदा शीश उतारा जाता है
यही सिर्फ वह देश जहां सिर गौरव से तन जाता है
यही मुल्क है जहां मुसलमान राष्ट्रपति बन जाता है
इसकी आजादी की खातिर हम भी सबकुछ भूले थे
हम ही अशफाकुल्ला बन फांसी के फंदे झूले थे

अब्दुल गफ्फार

हमने ही अंग्रेजों की लाशों से धरा पटा दी थी
खान अजीमुल्ला बन लंदन को धूल चटा दी थी
ब्रिगेडियर उस्मान अली इक शोला थे, अंगारे थे
उस सिर्फ अकेले ने सौ पाकिस्तानी मारे थे
हवलदार अब्दुल हमीद बेखौफ रहे आघातों से
जान गई पर नहीं छूटने दिया तिरंगा हाथों से
करगिल में भी हमने बनकर हनीफ हुंकारा था
वहाँ मुसर्रफ के चूहों को खेंच खेंच के मारा था
मिटे मगर मरते दम तक हम में जिंदा ईमान रहा
होठों पे कलमा रसूल का दिल में हिंदुस्तान रहा
इसीलिए कहता हूँ तुझसे,यूँ भड़काना बंद करो
जाकर अपनी फिल्में कर लो हमें लडाना बंद करो
बंद करो नफरत की स्याही से लिक्खी पर्चेबाजी
बंद करो इस हंगामें को, बंद करो ये लफ्फाजी
यहां सभी को राष्ट्र वाद के धारे में बहना होगा
भारत में भारत माता का बनकर ही रहना होगा
भारत माता की बोली भाषा से जिनको प्यार नहीं
उनको भारत में रहने का कोई भी अधिकार नही।

कौन हैं नूरजहां, जिसकी पीएम मोदी ने की तारीफ?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मन की बात कार्यक्रम में सौर ऊर्जा से अपने गांव को रोशन कर रही नूरजहां का नाम क्या लिया, कानपुर के छोटे से गांव बेरी दरियांव देश भर में चर्चा में आ गया। शहर से 25 किलोमीटर दूर बने शिबली के इस बिना सुख सुविधाओं वाले गांव की नूरजहां के घर भारतीय जनता पार्टी नेताओं का ही नहीं, बल्कि मीडिया का भी जमावड़ा लग गया। काफी खुश दिखायी पड़ रही नूरजहां को उम्मीद है कि अब उन्हें अपना काम बढ़ाने के लिए सरकारी सहायता मिल सकेगी।

गांव के पचास लोगों को 100 रुपये प्रति माह के किराए पर सौर ऊर्जा की लालटेन किराए पर देकर अपने परिवार के छह सदस्यों का पेट पालने वाली नूरजहां आज से तीन साल पहले तक खेतों में मजदूरी करती थी। शाम को वह इस पैसे का आटा और दूसरे सामान लाकर अपना और अपने परिवार का पेट पालती थी। लेकिन गांव में एक कम्युनिटी रेडियो चलाने वाली स्वयंसेवी संस्था ने तीन साल पहले नूरजहां की जिंदगी ही बदल दी और उसे अब अपने पैरो पर खड़ा कर दिया।

सरकार से आर्थिक मदद की उम्मीद : नूरजहां को उम्मीद है कि प्रधानमंत्री द्वारा उसका नाम रेडियो पर लेने से शायद अब सरकार से उसको कुछ आर्थिक सहायता मिल सके और वह अपनी 50 सौर ऊर्जा लालटेनों को बढ़ाकर 100 कर ले, क्योंकि गांव में पर्याप्त बिजली न होने के कारण बच्चों को पढ़ाने के लिए उसकी सौर लालटेन की मांग अब दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। 15 रुपये रोजाना पर खेतों में मजदूरी करती थीं नूरजहां प्रधानमंत्री द्वारा सराहना किए जाने से 55 वर्षीय नूरजहां बेहद खुश हैं। वह कहती हैं, 'बीस साल पहले मेरे पति का निधन हो गया था वह बैंड मास्टर थे। उनके निधन के समय बच्चे बहुत छोटे थे और खेती की जमीन भी नहीं थी। फिर बच्चों का पेट पालने के लिए गांव के खेतों में 15 रुपये रोज की मजदूरी करने लगी। इससे वह अपने परिवार का पेट पालती थी। नूरजहां और उसके परिवार का पेट कभी कभी ही भर पाता था, क्योंकि मजूदरी रोज नहीं मिलती थी।(एजेंसी)

फ्रेंडशिप क्लब या टेलीफोनिक मनोरंजन!

आप अकेले है...? मन उदास रहता है...? कोई महिला दोस्त नहीं है...? किसी लड़की को दोस्त बनाना चाहते हैं...? तो देर किस बात की, नीचे लिखे फोन नंबर पर किसी भी उम्र के युवक और युवतियां कॉल करें। ऐसे ही तमाम विज्ञापन आपको रोज समाचार पत्रों में देखने को मिलेंगे। दरअसल यह एक व्यापार है, जो फोन काल करने वाले से उसकी बात करने के दौरान लिये गए काल चार्जेज पर चलता है, इनके द्वारा दिए गए फोन नंबर पर काल करने पर आपको इंटरनेशनल/एसटीडी काल का चार्ज देना पड़ेगा। फ्रेंडशिप क्लब के नाम पर चल रहा ये व्यापार पूरी तरह फोन काल पर ही निर्भर होता

है, लेकिन आज अधिकतर फ्रेंडशिप क्लब इस व्यापार को गलत दिशा में ले जा रहे हैं, जिसे एक तरह से हम टेलीफोनिक मनोरंजन का भी नाम दे सकते हैं।

यूँ तो विज्ञापन में सिर्फ दोस्ती करने के इच्छुक युवाओं को आमंत्रित किया जाता है, लेकिन आज न जाने कितने क्लब खुल चुके हैं, जो इसके नाम पर गलत धंधा भी चलाने लगे हैं, जिसे हम टेलीफोनिक मनोरंजन भी कह सकते हैं, क्यूंकि आज बहुत से ऐसे फ्रेंडशिप क्लब आपस में दोस्ती करवाने के नाम पर लोगो से मेंबरशिप शुल्क भी मांगने लगे है। काल करने वाले को शुल्क जमा करने के लिये एक अकाउंट नंबर दिया जाता है, जिसमे मेंबरशिप शुल्क जमा करने को कहा जाता है। जिसके बदले में आपको युवतियों के फोन नंबर भी उपलब्ध करा दिए जाते हैं या यूँ कहे कि आपको उस युवती से किसी भी तरह की बात करने की आजादी दी जाती है।

ऐसे क्लबों में युवको को आकर्षित करने के लिये प्यार मोहब्बत के साथ साथ पुरुष–महिला के आपसी संबंधों पर बात करने पर अधिक जोर दिया जाता है। जिससे लोग आकर्षित हो कर दुबारा काल करें। इस प्रकार के क्लबों से युवा पीढ़ी अधिक आकर्षित होकर पुनः काल करती है, जो इन्हें गलत दिशा में ले जाती है। दूसरी तरफ आज हमारे समाज में ऐसे क्लबों द्वारा फैलाये गये वायरस से युवा पीढ़ी पर बुरा असर पड़ा है, जिसकी मिसाल राह चलते फोन पर बात कर रहे युवा–युवती को देखा जा सकता है। दिन हो या रात घर की छतों पर घंटों फोन पर बात करने का नजारा देखने को मिल ही जायेगा। वहीं रही सही कसर हमारे मोबाइल कंपनियों ने सस्ती काल कर के पूरी कर दी है। **महेंद्र कुमार पांडेय**

कानून का दुरुपयोग

जिन पर कानून की सही–सही व्याख्या करने और उसे अमल में लाने की जवाबदेही है, वही कानून के साथ खिलवाड़ करने लगें तो इसे क्या कहा जाए संसद द्वारा एक दशक पहले बनाए गए एक कानून का अदालतें ही गलत ढंग से पालन कर रही हैं। पिछले साल उन्होंने हत्या, डकैती और महिलाओं के साथ अत्याचार के 4000 से भी ज्यादा मामले अभियुक्तों और पीड़ितों के बीच समझौते कराकर निपटा दिए। नैशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो के मुताबिक विभिन्न अदालतों ने मर्डर के 27, हत्या की कोशिश के 55, रेप के 40 और डकैती के 27 मामले आपसी रजामंदी से सुलझा दिए। इसके अलावा औरतों के खिलाफ हिंसा से जुड़े 3584 मामले भी इसी तरह निपटा दिए गए, जिनमें 2200 पतियों की क्रूरता और 1045 स्त्री के शील पर हमले के केस थे। समझौते वाली बात ऊपरी तौर पर बड़ी आकर्षक लगती है, लेकिन इसमें न्याय से ज्यादा अन्याय का भाव निहित है। सन 2005 में अमेरिका के एक कानून से प्रभावित होकर भारतीय संसद ने सीआरपीसी में संशोधन के जरिए यह कानून बनाया कि अदालत अभियुक्त को पीड़ित के साथ समझौते का अवसर देगी। अभियुक्त अगर पीड़ित को समुचित मुआवजा या दूसरी तरह की सहायता देकर संतुष्ट कर देता है तो अभियुक्त की सजा में कमी की जा सकती है, या माफी भी दी जा सकती है। यह कानून अदालतों के सामने लगे आपराधिक मामलों के अंबार को कम करने के मकसद से बनाया गया था। जेलों की भीड़ कम करना भी इसका एक उद्देश्य था। लेकिन कुछ अपराधों को इस कानून के दायरे से बाहर रखा गया था, क्योंकि कानून–निर्माताओं को भय था कि अमीर और प्रभावशाली तबका इसका नाजायज फायदा उठा सकता है। उन सभी

मामलों को इस कानून से अलग रखा गया था, जिनमें सात साल या उससे ज्यादा की सजा का प्रावधान हो। इसके अलावा औरतों के साथ अपराध के सभी मामलों को इससे दूर रखा गया था। पर नैशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो के आंकड़ों से जाहिर है कि कानून के लिए जो सीमाएं बांधी गई थीं, उन्हें न्यायाधीशों ने अपनी मर्जी से दरकिनार कर दिया। इससे अदालतों का बोझ तो कम नहीं ही हुआ, अलबत्ता अभियुक्तों को इसका भरपूर लाभ मिल रहा है। न्यायपालिका को हमारे देश में एक पवित्र क्षेत्र माना जाता है, इसलिए उसकी अनियमितताओं पर बहुत कम बात होती है। लेकिन हकीकत यही है कि आम आदमी और कमजोर वर्ग के लिए न्याय आज भी बहुत दूर की चीज है। इंसाफ दिलाने वाला पूरा तंत्र ही हमारे देश में ताकतवर के पक्ष में सक्रिय दिखता है। यह तबका कानून में हमेशा कोई छेद तलाशता रहता है, जिसके जरिए वह अपने हित साध सके। प्ली– बारगेनिंग का यह कानून शक्तिशाली लोगों के लिए मुफीद साबित हो रहा है, क्योंकि इसके जरिए दूसरे पक्ष को थोड़े पैसे देकर या उस पर समझौते के लिए दबाव बनाकर वे साफ बच निकलते हैं। न्याय का तकाजा है कि ऐसे सारे मुकदमे दोबारा खोले जाएं और इस गड़बड़ी को आगे के लिए नजीर बनने से रोक दिया जाए।(एजेंसी)

स्वास्थ्य सूत्र

हर दिन एक सेब	नो डाक्टर	हर दिन एक गिलास दूध	नो हड्डियों की कमजोरी
हर दिन एक तुलसी	नो कैंसर		
हर दिन एक नींबू	नो मोटापा	हर दिन 3 लीटर पानी	नो बीमारी

जेल से बेल पर निकले 915 कैदी फरार

हत्या, लूट, अपहरण और डकैती की वारदातों में शामिल 915 खूंखार अपराधी दिल्ली और इसके आस–पास के इलाकों में खुली हवा में सांस ले रहे हैं। दिल्ली पुलिस के पास इसकी जानकारी भी है, मगर साथ में लाचारी भी है। पुलिस के पास इन अपराधियों की जन्म कुंडली तो है मगर, इन अपराधियों के पतों व अन्य

जरूरी जानकारी नदारद है। पुलिस रिकार्ड में दर्ज 500 से ज्यादा अपराधियों के मकान व रिश्तेदारों के पते तक फर्जी पाए गए हैं। जिससे पुलिस अपराधियों का सुराग तक नहीं लगा पा रही है। ये सभी अपराधी दिल्ली हाईकोर्ट से जमानत मिलने के बाद तिहाड़ जेल से निकले और फरार हो गए।(सं.)

सवालों से भागते अरविंद केजरीवाल

एन.के. सक्सेना

करीब चार साल पहले जब लोकपाल आंदोलन अपने शिखर पर था, तब अरविंद केजरीवाल प्रतिद्वंद्वियों के लिए बिजली के नंगे तार जैसे थे – जिसको छू लें, उसको करंट मार जाएं। प्रशांत भूषण और किरण बेदी के साथ मिलकर कांग्रेस और बीजेपी के बड़े नेताओं की पोल खोलते, भ्रष्टाचार के खिलाफ नौजवानों का आह्वान करते और देश को बदल डालने का सपना दिखाते केजरीवाल ने देश के लाखों लोगों पर जादू किया। बेशक, मोदी के विकास का जादू केजरीवाल के विश्वास के जादू से बड़ा निकला और बनारस ने उन्हें बड़ी शिकस्त दी, लेकिन दिल्ली में बीजेपी का रथ रोककर उन्होंने फिर से बताया कि नायक–पूजा के मामले में वह मोदी से ज्यादा पीछे नहीं हैं।

लेकिन प्रधानमंत्री मोदी का जादू जितना टूटा है, उससे कहीं ज्यादा केजरीवाल का तिलिस्म टूटा है। वह अपने ही आंदोलन के दौरान बने जनलोकपाल विधेयक को हल्का कर पेश कर रहे हैं, वह इस मुद्दे पर अपने पुराने सहयोगियों से बहस करने को तैयार नहीं हैं, वह लालू यादव से गले मिल रहे हैं, वह संवाद की जगह विपक्ष के नेताओं को मार्शल से बाहर फिंकवा रहे हैं, वह बहुत सारी ऐसी हरकतें कर रहे हैं, जिनका उनकी अपनी गढ़ी हुई आदर्श राजनीति से वास्ता नहीं है। सवाल है, क्या केजरीवाल समझौतावादी हो गए हैं...? क्या राजनीति ने उन्हें उनके लक्ष्यों के प्रति बेईमान बना दिया है...? जो लोग यह मानते हैं, वे न केजरीवाल के व्यक्तित्व की बनावट को समझते हैं, न उनकी राजनी. ति की विडम्बनाओं को।

दरअसल केजरीवाल के राजनीतिक दर्शन में जो शुद्धतावाद है, वह किसी वैचारिक समझ से ज्यादा भ्रष्टाचार या शासन को लेकर चली आ रही मध्यवर्गीय धारणा से पैदा हुआ है। इस धारणा में पढ़े–लिखे लोग अच्छे होते हैं, भ्रष्टाचार का मतलब सरकारी दफ्तरों में होने वाली रिश्वतखोरी होता है, सख्त कानून बनाकर भ्रष्टाचार को खत्म किया जा सकता है और ईमानदारी के इस सतही दायरे में चलते हुए देश को बदला जा सकता है। केजरीवाल जब तक आंदोलन में रहे, इस धारणा का मूर्त रूप रहे, निजी तौर पर इस ईमानदारी को उन्होंने सख्ती से लागू किया और इस वजह से उस मध्यवर्गीय भारत के नायक बने, जिससे इतनी ईमानदारी भी नहीं सधती है।

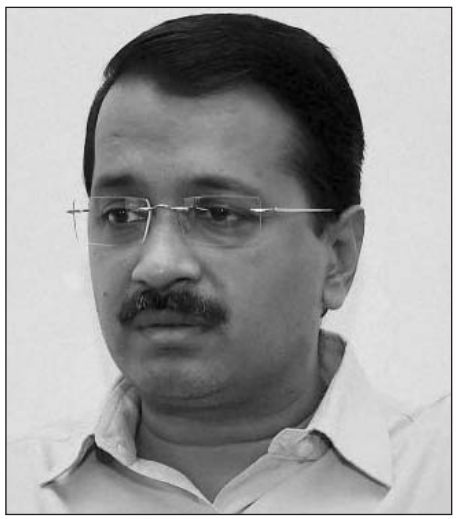

लेकिन संकट यह है कि यह देश कहीं ज्यादा उलझा हुआ है। **भ्रष्टाचार सरकारी दफ्तरों के बाबुओं की बेईमानी से नहीं, इस देश की सामाजिक और आर्थिक गैर–बराबरी और उसके बीच बची रही औपनिवेशिक विरासत से पैदा हुआ है। जब तक यह गैर–बराबरी रहेगी, भ्रष्टाचार रहेगा** और उसके लिए एक तरह की सामाजिक स्वीकृति भी रहेगी। इस गैर–बराबरी को खत्म करने के लिए जितने आर्थिक प्रयत्न करने की जरूरत है, उससे ज्यादा सामाजिक प्रयत्न करने की जरूरत है। अलग–अलग तबकों के लिए आरक्षण और विशेष अवसरों की बात इसी सामाजिक प्रयत्न का हिस्सा है।

जाड़े की धूप
टमाटर का सूप ।।
मूंगफली के दाने
छुट्टी के बहाने ।।
तबीयत नरम
पकौड़े गरम ।।
ठंडी हवा
मुँह से धुँआ ।।
फटे हुए गाल
सर्दी से बेहाल ।।
तन पर पड़े
ऊनी कपड़े ।।
दुबले भी लगते
मोटे तगड़े ।।
किटकिटाते दांत
ठिठुरते ये हाथ ।।
जलता अलाव
हाथों का सिकाव ।।
गुदगुदा बिछौना
रजाई में सोना ।।
सुबह का होना
सपनो में खोना ।।
स्वागत है सर्दियों
का आना
आपको सर्दी की
शुभकामनांए

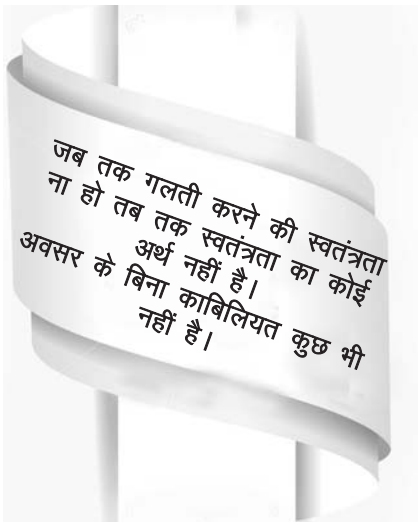

सातवां वेतन आयोग किसके लिए...?

विजय बहादुर सिंह

देश में केवल एक करोड़ कर्मचारी और पेंशनधारी हैं... राज्य सरकारों के कर्मचारियों का गणित तो अलग है ही... और जैसा कि परंपरा है, राज्य सरकारों के बाद राज्य के कर्मचारियों के दबाव के आगे सरकारों को वेतन–भत्ते बढ़ाने ही पड़ते हैं, तो इस तरह अनुमानित तौर पर देश की अर्थव्यवस्था पर तीन लाख करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ने वाला है... क्या यह भारी–भरकम बोझ सरकारी व्यवस्था के भ्रष्टाचार को दो–चार फीसदी भी कम करेगा, क्या राजीव गांधी के ज़माने से रुपये में 15 पैसे जमीन तक पहुंचने की थ्योरी को जरा भी झुठलाने की गारंटी देगा...?इस सवाल पर हम बाद में सोचेंगे, लेकिन इस वक्त अदद तो यही है कि आखिर केवल 50 लाख कर्मचारियों को खुश करने की कवायद क्यों, जबकि देश के सात करोड़ किसानों की हालत खस्ता है... क्या यह केवल इसलिए, क्योंकि नीतियां बनाने और निर्णय लेने की भूमिका में वे ही हैं... सांसद–विधायक अपने वेतन–भत्ते बढ़वा लेते हैं, कर्मचारी अपने वेतन–भत्ते बढ़वा लेते हैं, लेकिन समाज के उपेक्षित तबके किसान और मजदूरों बेरोजगारों की चिंता कौन करेगा...? क्या यह एक प्रकार की असहिष्णुता नहीं है...?

यह समझना इतना कठिन भी नहीं है... पिछले दो दशकों में आर्थिक उदारीकरण के अनुभवों ने हमें सिखा दिया है... हमने देख लिया है कि बाजार किस तरह दबाव बनाकर काम करता है, और अपनी मनवा लेता है... हम समझ गए हैं कि निर्णय तो बाजार ही लेता है... दरअसल सातवां वेतन आयोग लागू होने के बाद का जो मुनाफा है, वह कर्मचारियों के भले से ज्यादा बाजार के भले की बात है... या तो ज्यादा रकम करों के रूप में सरकार के पास वापस हो ही जाएगी, क्योंकि हमारे देश में कर बचाने की घातक परंपरा है, और उस रकम को हम निवेश करते हैं, अपनी सुविधा की चीजें बाजार से बटोरते हैं... तो तय है कि भला तो बाजार का ही होगा... इस भले में कोई बुराई भी नहीं है, हम तो सातवें क्या आठवें, नौवें और दसवें वेतन आयोग की अभी से पैरवी करते हैं, लेकिन शर्त यही है कि समाज के उपेक्षित तबकों के बलिदान पर यह सब नहीं ही किया जा सकता।

सरकार जीएसटी और रीयल एस्टेट विधेयक पर आगे बढ़ेगी

मनोज भाटी

सरकार ने संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान दोनों सदनों में ढेर सारे विधायी कामकाज को आगे बढ़ाने की योजना बनाई है और इस मकसद से जीएसटी एवं रीयल एस्टेट जैसे महत्वपूर्ण विधेयकों को विचार और पारित करने के लिए सूचीबद्ध किया है। सरकार की लोकसभा में छह और राज्यसभा में सात विधेयकों को पारित कराने की योजना है। इनमें से दो विधेयक पहले से ही निचले सदन में और तीन विधेयक उच्च सदन में सूचीबद्ध हैं।

सरकार का मुख्य जोर महत्वपूर्ण जीएसटी विधेयक को पारित कराने पर होगा। इसे आधिकारिक रूप से संविधान के 122वें संशोधन विधेयक के रूप में जाना जाता है। इस विधेयक को लोकसभा पारित कर चुकी है। सरकार की योजना अगले साल अप्रैल से वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) को लागू करने की है। अन्य महत्वपूर्ण विधेयकों में भ्रष्टाचार निरोधक संशोधन विधेयक शामिल है, जिस पर राज्यसभा में शुक्रवार को चर्चा हुई। सदन की प्रवर समिति इन दोनों विधेयकों पर पहले ही अपनी रिपोर्ट सौंप चुकी है।

लोकसभा के विधायी कार्यों के एजेंडे में उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय न्यायाधीश वेतन एवं सेवा शर्तें संशोधन विधेयक 2015, मध्यस्थता और सुलह संशोधन विधेयक 2015, बोनस भुगतान संशोधन विधेयक और इंडियन ट्रस्ट संशोधन विधेयक 2015 पर विचार और उसे पारित किया जाना शामिल है। संसदीय मामलों के मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि सरकार ने 2015 –16 के लिए अनुदान की अनुरूपक मांगों और 2012–13 के लिए अतिरिक्त अनुदान की मांग को शीतकाल. ीन सत्र के तीसरे सप्ताह में चचा के लिए लेने की योजना बनाई है।

राज्यसभा में भ्रष्टाचार निरोधक संशोधन विधेयक 2013, लिखित परक्राम्य संशोधन विधेयक 2015 और व्हीसलब्लोअर्स संरक्षण संशोधन विधेयक 2015 को भी लिये जाने की योजना है जो लोकसभा में पारित हो चुके हैं।

इसमें से पहला विधेयक शुक्रवार को राज्यसभा में लिया गया था जिस पर कांग्रेस, समाजवादी पार्टी एवं अन्य ने सावधानी बरतने की वकालत की थी। इसके अलावा उच्च सदन में अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निरोधक) संशोधन विधेयक विनियोग कानून निरसन विधेयक और बाल श्रम संरक्षण एवं नियमन संशोधन विधेयक को भी लिया जाना है।

विवाह विच्छेद तलाक और महिला अधिकार

पूनम सिंह

पहले मुस्लिम महिलाओं को तलाक के केवल दो अधिकार प्राप्त थे 1–पति की नपुन्संकता, 2–परपुरुषगमन का झूठा आरोप, किन्तु न्यायिक विवाह–विच्छेद मुस्लिम विवाह–विच्छेद अधिनियम 1939, द्वारा मुस्लिम महिलाओं को ६ अधिकार प्राप्त हो गए हैं :

1–पति की अनुपस्थिति,
2–पत्नी के भरण–पोषण में असफलता,
3–पति को सात साल के कारावास की सजा,
4–दांपत्य दायित्वों के पालन में असफलता,
5–पति की नपुन्संकता,
6–पति का पागलपन,
7–पत्नी द्वारा विवाह की अस्वीकृति ख्यदि विवाह के समय लड़की 15 वर्ष से काम उम्र की हो तो वह 18 वर्ष की होने से पूर्व विवाह को अस्वीकृत कर सकती है,,
8–पति की निर्दयता,
9–मुस्लिम विधि के अंतर्गत विवाह विच्छेद के अन्य अधिकार, ऐसे ही हिन्दू विधि में विवाह विधि संशोधन अधिनियम 1976 के लागू होने के बाद महिलाओं की स्थिति मजबूत हुई है और पति द्वारा बहुविवाह व पति द्वारा बलात्कार,गुदा मैथुन अथवा पशुगमन दो और अधिकार महिलाओं को प्राप्त हो गए हैं जबकि इससे पूर्व 11 अधिकार पति–पत्नी दोनों को प्राप्त थे। वे अधिकार निम्न हैं।

1–जारता, 2–क्रूरता, 3–अभित्याग, 4 –धर्म–परिवर्तन, 5 –मस्तिष्क विकृत्ता ,6––कोढ़, 7–– रतिजन्य रोग ,8–संसार परित्याग, 9––प्रकल्पित मृत्यु 10 –न्यायिक प्रथक्करण , 11– –दांपत्य अधिकारों के पुनर्स्थापन की आज्ञप्ति का पालन न करना।

फैजाबाद में बावरिया गिरोह का आतंक

बावरिया गिरोह के नाम पर जिस तरह का जंगल राज पिछले कुछ दिनो से फैजाबाद में कायम है उससे भी चिंताजनक पुलिस प्रशासन की वो कार्यप्रणाली है जिसके कारण लोगों को अपनी पुलिस पर भरोसा नहीं रह गया और लोग खुद रात रात भर दहशत में जागने को मजबूर है...दहशत का आलम है की कभी अकेले शादी से लौटते लोगों को पीटा जा रहा है तो कोई अनजान रात में रास्ता भटक जाने से पिट जा रहा है...यहाँ तक की आज अपने एक मित्र को लोगों ने दिन में ही घेर लिया केवल किसी को खोजते अनजाने में एक घर के चक्कर लगाने के कारण...इस दहशत के माहौल में प्रसाशन को ऐसे सार्थक प्रयास करने होंगे की लोगों का विश्वास पुलिस पर बढे...वर्ना कभी भी कोई अप्रिय घटना हो सकती है...समाज झकजोर कर जगाना शुरू करे उससे पहले जाग जाना ही बेहतर है।(सं.)

असफल व्यक्तियों में से 99 फीसद वह लोग होते हैं, जिनकी आदत बहाना बनाने की होती है।

लोक जागृति के कुछ सामाजिक कार्य

गरीबों को कम्बल वितरण।

वृक्षारोपण कार्यक्रम।

लोक जागृति की ओर से आयोजित किया गया गांधी मेला।

संस्था की ओर से कवि सम्मेलन का आयोजन।

गरीब स्कूली बच्चों को कपड़ों का वितरण।

सीवर समस्या को लेकर जन जागरण।

कांवड़ में खाद्य सामग्री वितरण।

निर्भया कांड पर जागरुकता रैली।

क्या भारत का सिस्टम आम जनता को धोखा देता है?

1– नेता चाहे तो 2 सीट से एक साथ चुनाव लड़ सकता है !!
लेकिन...
आप दो जगहों पर वोट नहीं डाल सकते,

2–आप जेल मे बंद हो तो वोट नहीं डाल सकते।।
लेकिन...
नेता जेल मे रहते हुए चुनाव लड़ सकता है।

3–आप कभी जेल गये थे, तो अब आपको जिंदगी भर कोई सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी,
लेकिन...
नेता चाहे जितनी बार भी हत्या या बलात्कार के मामले में जेल गया हो, वो प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति जो चाहे बन सकता है,

4–बैंक में मामूली नौकरी पाने के लिये आपका ग्रेजुएट होना जरूरी है।।
लेकिन...
नेता अंगूठा छाप हो तो भी भारत का फायनेन्स मिनिस्टर बन सकता है।

5–आपको सेना में एक मामूली सिपाही की नौकरी पाने के लिये डिग्री के साथ 10 किलोमीटेर दौड़ कर भी दिखाना होगा,
लेकिन...
नेता यदि अनपढ़–गंवार और लूला–लंगड़ा है तो भी वह आर्मी, नेवी और ऐयर फोर्स का चीफ यानि डिफेन्स मिनिस्टर बन सकता है
और जिसके पूरे खानदान में आज तक कोई स्कूल नहीं गया।। वो नेता देश का शिक्षा मंत्री बन सकता है

सरकार और शासन

सौरभ पाण्डेय
(अतिथि संपादक)

पूर्ववर्ती सरकारों की उदासीनता एवं अकर्मण्यता , समाज के समस्त वर्गों को एक स्थिर एवं प्रभावी सरकार की ओर प्रेरित करती है। व्यापक जन समर्थन से चयनित सरकार को समाज के प्रति न केवल सहज संवैधानिक दायित्व निर्वहन करने होते है वरन समस्त देशवाशियों के उनके बहुप्रतीक्षित अभिलाषाओं को शुद्ध हृदय से पूरित करने होते है जिनके आधार पे चुनाव लड़े जाते है और जो चुनावी सभाओं में राजनीतिक वक्तव्य एवं घोषणा पत्र का हिस्सा बनते है .देश में वर्षो के उपरांत जाती, संप्रदाय एवं निहित स्वार्थ्य से परे ,प्रत्येक जागरूक व्यक्ति ने मतदान में भागीदारी ली और फलस्वरूप एक स्थिर एवं दृढ़ निश्चयी सरकार अस्तित्व में आयी।

नयी सरकार के शपथ ग्रहण से लेकर आज तक पीएमओ समेत संपूर्ण मंत्रालय देश एवं विदेश में सभी सम्बंधित क्षेत्रों में क्रियान्वयन एवं व्यापक परिवर्तन को लेकर सक्रिय है तथा निरंतर कार्यरत है संसद की दैनिक चर्चा हो या मंत्रालय कार्यक्रम या विदेशी भ्रमण के दौरान अप्रवासियो के मध्य उद्बोधन नए प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय समर्पण एवं दूरदर्शिता के उत्कृष्ट लक्षण है, जिसके देशवाशी ही नहीं विदेशी भी नतमष्तक है हर इक क्षेत्र में लुप्त हुए राष्ट्रीय सम्मान को सम्पूर्ण विश्व में पुनः स्थापित करने का यह अविश्मरणीय प्रयास भारतवाशियों के लिए स्वयं एक इतिहास बनता जा रहा है जोकि अभी कुछ ही वर्ष पहले असंभव सा प्रतीत होता था ।

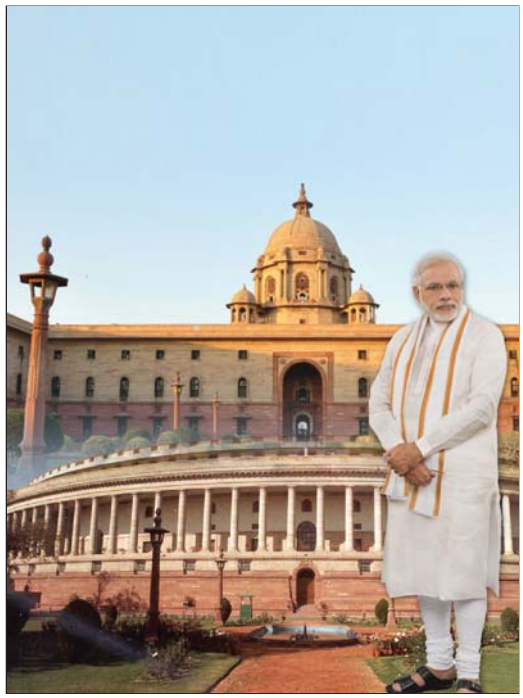

विषय की प्रस्तावना लिखते समय मैंने प्रयास किया की यह लेख सरकार प्रायोजित या व्यक्ति अथवा पार्टी विशेष न लगे परन्तु मैंने नाहक असहिष्णुता जैसे आधारहीन विषयों के साथ आलोचक बनने का प्रयास नहीं किया क्यूंकि देश की पुनः स्थापित होती छवि को धूमिल करने का देशद्रोह जैसा प्रयास मुझ जैसा सामान्य नागरिक नहीं कर सकता।

सरकार की आलोचना के अनेक विषय हो सकते है जो स्वाभवाकि भी हो सकते है और आवश्यक भी और सकारात्मक विपछ की यही भूमिका होती है जोकि समय समय पर सरकार को उनके वचनबद्धत्ता एवं नैतिक उत्तरदायित्व के लिए आगाह करती रहे तथा मार्गदर्शन करती रहे । दुर्भाग्य से पूर्वाग्रह से ग्रसित समूचा विपछ एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत विश्वव्यापी राष्ट्रविरोधी अभियान में संलग्न है और इसके लिए हर संभव प्रयास किये जा रहे है। राष्ट्र को मूलभूत समस्या से दूर रखने एवं सामान्य नागरिक का ध्यान विमर्श करने के लिए किराये के कलाकार ,लेखक एवं तथाकथित विचारकों का उपयोग किया जा रहा है जैसा की इस देश में हमेशा से होता आया है . देश को दिग्भ्रमित किये रहने का प्रयास अनवरत जारी है ताकि नयी सरकार का ध्यान एवं ऊर्जा अनर्गल ,दिशाहीन विषयों में उलझाया रखा जा सके।

ACUITY इवेंट II इसी विषय को ध्यान में रखते हुए आयोजित है। राष्ट्रीय विषयो पर सरकार के लोगो के साथ सामान्य लोगों का सीधा संवाद ही इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। मुझे पूर्ण विश्वास है गत वर्ष की भांति इस बार का हमारा राष्ट्रीय कार्यक्रम 'सरकार एवं शासन' अपने विषय को आप तक पहुँचाने में सफल रहेगा।

भारत की सोने की मांग 26 प्रतिशत घटी

बृजमोहन

भारत में आयात शुल्क में बढ़ोतरी और सरकार द्वारा आपूर्ति पर नियंत्रण लगाने के कारण सोने की मांग जनवरी–मार्च की तिमाही में 26 प्रतिशत घटकर 190.3 टन रह गई। यह बात विश्व स्वर्ण परिषद यानि डब्ल्यूजीसी ने कही। डब्ल्यूजीसी के मुताबिक 2013 की पहली तिमाही में देश में सोने की मांग 257.5 टन थी। मूल्य के लिहाज से 2014 की पहली तिमाही के दौरान सोने की मांग 33 प्रतिशत घटकर 48,853 करोड़ रुपये रह गई जो 2013 की पहली तिमाही में 73,183.6 करोड़ रुपये थी। डब्ल्यूजीसी की भारतीय इकाई के प्रबंध निदेशक सोमसुंदरम पीआर ने कहा 2014 की पहली तिमाही के दौरान मांग 26 प्रतिशत घटी है। इससे जाहिर होता है कि हाजिर बाजार में सोने की कीमत अधिक होने चालू खाते का घाटा कम करने के लिए सरकार द्वारा सोने पर आयात शुल्क बढ़ाने और इसकी आपूर्ति पर अंकुश लगाने का असर बरकरार रहा।

यूपी ग्रीन टैक्स देना होगा अनिवार्य

उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य में गैर परिवहन वाहनों पर पुनः पंजीयन के समय ग्रीन टैक्स, हरित कर, अधिरोपित किए जाने को मंजूरी प्रदान कर दी है।

लखनऊ में हुई राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में उत्तर प्रदेश मोटरयान कराधान, संशोधन विधेयक 2014 के प्रारुप को मंजूरी प्रदान कर दी है। राज्य शासन के अधिकारी ने बताया कि उत्तर प्रदेश के शहरी इलाकों में प्रदूषण की स्थिति चेता. वनी के स्तर तक बढ़ चुकी है। इसके पीछे एक प्रमुख कारण राज्य में 10 साल से भी अधिक पुराने वाहनों का परिचालन जारी रहना है। किसी भी वाहन की आयु में वृद्धि के साथ उससे होने वाले धुएं के उत्सर्जन में वृद्धि होती है और ऐसे वाहनों से प्रदूषण की संभावना भी अधिक होती है। इसे ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने कड़े कदम उठाने का निर्णय लिया है।

पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने की दृष्टि से आवश्यक है कि ऐसे पुराने वाहनों को पुनः पंजीयन के समय कर की देयता की परिधि में लाया जाए ताकि इससे प्राप्त होने वाले राजस्व का उपयोग पर्यावरण संरक्षण में किया जा सके। उक्त के क्रम में ग्रीन टैक्स यानि हरित कर के नाम से कर अधिरोपण प्रस्तावित किया गया है। राज्य कैबिनेट में मंजूरी मिलने के बाद अब जल्द ही सभी आरटीओ में इससे संबंधित आदेश जारी कर दिया जाएगा। (एजेंसी)

दवाओं के बिल की बचत ऐसे करें

1– HEALTHKART PLUS software को अपने ANDROID फोन में Download करें !
2– दवाई का नाम ढूँढे !
3– अपनी दवाई का नाम जो आप इस्तेमाल कर रहे हैं लिखे (जैसे Pfizer कंपनी की गोली Lyrica 75 mg) !
4– ये आपको दवाई का नाम, कंपनी, कीमत और दवाई की संरचना दिखायेगा !
5– ध्यान रहे अब आपको "SUBSTITUTE" पर click करना है !
6– आश्चर्य ना करें ये देख कर कि दूसरी प्रतिष्ठित कंपनी की यही दवाई बहुत ही कम कीमत पर उपलब्ध है ! उदाहरण के लिये – Lyrica दवाई का 14 गोलियों का एक पत्ता Pfizer कंपनी का 768.56 रु. का है यानी एक गोली की कीमत 54.89 रू. हुई! जबकि इसी दवाई का 10 गोलियों का पत्ता Cipla कंपनी का सिर्फ 59 रू. (एक गोली की कीमत 5.90 रु) में उपलब्ध है! ये दवाई कंपनी की बहुत बडी सोची समझी साज़िश है कि generic दवाइयों को रोका जाये ! लेकिन कोर्ट ने जनहित व दवाइयों की जरुरत को ध्यान में रखा ! दया की कोई कीमत नहीं होती! (एजेंसी)

ISIS से आर–पार की लड़ाई का वक्त

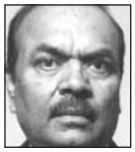

सतेंद्र मिश्रा

फ्रांस में हुए आतंकवादी हमलों के बाद दुनिया भर में इससे निपटने के लिए संकल्प व्यक्त किए जा रहे हैं। दुनिया के शक्तिशाली राष्ट्र आतंकवादी संगठन आईएसआईएस के खात्मे के लिए एकजुट वैश्विक प्रयास पर जोर दे रहे हैं। देशों का मानना है कि आईएसआईएस से अकेले नहीं निपटा जा सकता उसे हराने और दुनिया से खत्म करने के लिए एकजुट होकर सामूहिक प्रयास करने की जरूरत है। फ्रांस हमले के बाद दुनिया के ताकतवर देश आतंकवाद के खिलाफ एक सुर में बोल रहे हैं। यह सही है कि आईएसआईएस से अकेले निपटना आसान नहीं है। इस दुर्दांत आंतकी संगठन पर नकेल कसने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे। अमेरिका के नेतृत्व में उसके सहयोगी देश पिछले एक साल से सीरिया में आईएसआईएस पर हवाई हमले कर रहे हैं लेकिन आतंकी संगठन का दायरा सिमटने के बजाय फैलता जा रहा है। पहले वह सीरिया और इराक में ही लोगों का कत्ल करता था लेकिन उसने अब अपनी चौहद्दी लांघ दी है। बेरूत और फ्रांस इसके उदाहरण हैं। वह दिनोंदिन ग्लोबल होता जा रहा है। रूस, फ्रांस और अब ब्रिटेन के हवाई हमलों ने उसे कमजोर करने का काम किया है लेकिन बात केवल इतने से ही नहीं बनेगी। देशों को आपसी हितों और मतभेदों को भुलाकर एक साथ आना होगा और इस बुराई के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़नी होगी।

आईएसआईएस 21वीं सदी का भस्मासुर है। इस चरमपंथी संगठन के मंसूबे कितने खतरनाक हैं। इसका पता इस बात से चलता है कि इसने यमन, सऊदी अरब, इराक, इजिप्ट, लीबिया, अल्जीरिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान को अपना राज्य घोषित किया है। इसकी योजना कैलिफेट बनाने की है। सीरिया और इराक से आगे निकलकर अब यह यूरोप में दस्तक देने में लगा है। नवंबर महीने में फ्रांस में रक्तपात फैलाने से पहले इसके एक सहयोगी संगठन ने सिनाई में आत्मघाती हमला किया जिसमें चार पुलिसकर्मी मारे गए। 31 अक्टूबर को सिनाई में ही रूसी विमान को मार गिराया गया जिसमें 224 लोगों की जान गई। 12 नवंबर को बेरूत में दोहरे बम विस्फोट में 43 लोग मारे गए। पश्चिम एशिया के बाद आईएसआईएस ने अब यूरोप में खूनी खेल खेलना शुरू कर दिया है। कहीं आईएसआईएस तो कहीं उससे प्रेरित और सहानुभूति रखने वाले संगठन निर्दोष लोगों की बेदर्दी से हत्या कर रहे हैं। ये चरमपंथी संगठन बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और बच्चों को जान से मारने में जरा भी नहीं हिचकते। इनमें मानवता नाम की कोई चीज नहीं है। इनका कोई धर्म और मजहब नहीं है। समय आ गया है कि आईएसआईएस के कुंठित विचारों को दुनिया भर में फैलने से रोका जाए। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय योजना और रणनीति की जरूरत है।(एजेंसी)

हिन्दुओं की जीवन पद्धति है सनातन धर्म

सनातन धर्म हिन्दू मात्र एक धर्म ही नहीं पूरी की पूरी जीवन पद्धति है इसमें प्रत्येक दिवस आनन्द है उत्सव है मंगल है ,यह मंगल स्वहित तक नहीं सर्व भवन्तु सुखिनः के भाव से सर्वांगीण है व्यापक है अणु अणु के लिए कण कण के लिये,क्षण–क्षण के लिये। सनातन धर्म में प्रत्येक दिन, प्रत्येक वार प्रत्येक पक्ष (एकमास में दो पक्ष होते हैं) प्रत्येक माह, सहित पूरा जीवन ही मृत्यु पर्यन्त उत्सव है आनन्द दायक है ,सनातन धर्म में प्रतिपदा से पूर्णिमा तक और एकम से अमावस तक दो पक्ष हैं उजियाला पाख और अँधियारा पाख, इसमें उजियाला पाख बढ़ते हुए क्रम में क्रमशः बढ़कर पूर्णता प्राप्त करने का पक्ष है जो हमें शीतल, मनभावन पूर्णिमा के रूप में परिणत होता है तो अँधियारा पाख पूर्णता के क्षरण का पक्ष है जो क्रम से क्रमशः घटकर घनघोर काली अँधियारी के रूप में अमावस के रूप में परिणत होता है यह पूर्णता के क्षरण का पक्ष है,जो सन्देश देता है कि जो भी भरा है वह रिक्त अवश्य होगा, जो आ गया उसे नियत समय पर जाना होगा ताकि नया आ सके यही परिवर्तन है, यही जीवन का नियम है इसमें जाने वाले का शोक नहीं। अपितु आन. वाले का स्वागत है ये दोनों पक्ष शुक्ल पक्ष व कृष्ण पक्ष के नाम से शास्त्रों में वर्णित हैं। सनातन धर्म हिन्दू में जीवन के विभिन्न सोपानों ,विभिन्न पड़ावों के साथ –साथ सोलह संस्कारों की व्यवस्था है जो व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त निर्बाध रूप से अनवरत मनाया जाने वाला उत्सव है। सनातन धर्म हिंदू पूर्णतः वैज्ञानिक मानकों की कसौटी पर खरा उतरने वाला धर्म है नये जीवन को धरा पर लाने की तैयारी इसमें गर्भाधान संस्कार के रूप में है नन्हे बालक को भोजन कब से कराना है इसका उत्सव अन्नप्राशन है, इसी प्रकार विद्यारम्भ संस्कार के लिए भी उत्सव है तो विवाह भी एक संस्कार है जिसका अपना उत्सव है यहाँ पर यह जानना और समझना जरूरी है कि सनातन धर्म हिन्दू में विवाह विलासिता या भोग के लिए कभी नहीं रहा यहाँ पर विवाह सशक्त व सक्षम सन्तानोत्पत्ति व समर्थ वँशबेल को आगे बढ़ाने का एक नैतिक, प्राकृतिक, पुनीत कर्तव्य है। सनातन धर्म हिन्दू में रिक्तता कभी भी खाली हो जाने के लिए नहीं है वह पुनरूभरने के लिए है इसमें शून्यता में समग्रता है और समग्र पूर्णतरू शून्य है तभी तो मृत्यु यहाँ विलाप या शोक नहीं,नवजीवन को पुनः प्राप्त करने से पहले का एक संस्कार है।सनातन धर्म में मृत्यु भी एक पवित्र संस्कार है यहाँ आनन्दोत्सव मृत्यु पर्यन्त है पुरातन जर्जर शरीर को त्याग कर नवीन वस्त्रों को धारण करने की भाँति नव शरीर को प्राप्त करने का नया अवसर है ।

जीवन लम्बा होने की बजाये महान होना चाहिए।

हिंदी हमारी राज भाषा है

संविधान के भाग–17 के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। आज भी हिंदी भाषा की पहुँच सबसे ज्यादा क्षेत्रों में हैं।।। पर आज आधुनिकता और बदलते वातावरण के चलते हिंदी से हमारा नाता खत्म होता हुआ सा नजर आता है। पहले की पढ़ाई और अब की पढ़ाई में जमीन और आसमान का अंतर है। आज लोग हिंदी की बजाय अंग्रेजी को ज्यादा महत्व दे रहे हैं। आज कल जिसे दो वाक्य अंग्रेजी नहीं बोलने आती उसे समाज से पीछे का समझा जाता है। आज लोग अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए कॉन्वेंट स्कूलों का सहारा ले रहे हैं। आज लोग परा–स्नातक की उपाधि तो ले लेते हैं पर दो लाइन न शुद्ध हिंदी लिख पाते हैं न बोल पाते हैं।

आज सभी की मानसिकता हिंदी को लेकर बहुत ज्यादा बदल गयी है उन्हें लगता है कि हिंदी तो बहुत सरल है और जहाँ तक मुझे लगता है अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी ज्यादा कठिन है। पहले के कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, भारतेंदु हरिश्चंद्र, रामधारी सिंह दिनकर, महादेवी वर्मा जैसे महान लोगों ने हिंदी को अपनी परकाष्ठा पर पहुँचाया था। इन लोगों ने हिंदी को एक नयी दिशा दी थी। परन्तु आज ये विलुप्त होती सी दिख रही है। हिंदी से बढ़ती इस तरह की दूरी से लोगों को छोटी (ई), बड़ी (ई), छोटा (उ), बड़ा (ऊ) में फर्क करना बड़ा मुश्किल सा हो गया है। आज अमूमन जिस तरह हम बोलते, बातचीत करते हैं, उसी को हिंदी समझ लेते हैं। परन्तु ऐसा बिलकुल नहीं है।

आज हिंदी दिवस है और हर जगह बड़े–बड़े शहरों, जिलों आदि में गोष्ठी, सभाएं, चर्चाएँ आदि हो रही होगी। क्यूंकि हमारे यहाँ तो जिस दिन जो भी दिवस पड़ता है उस दिन उसको बखूबी याद किया जाता है। हिंदी से बना हिंदुस्तान और हिन्दुस्तानी होने के नाते हमारा ये फर्ज बनता की हिंदी भाषा को हम सभी बढ़ावा दें, जिससे हम आगे के लिए अपने कठिन रास्ते को आसन कर लें। हिंदी से ही हम सभी की पहचान है।

लेखिका नेहा श्रीवास्तव स्वतंत्र पत्रकार हैं।

बाल मौलिक रचना पाठ प्रतियोगिता : 2015 सम्पन्न

"पेड़ों की छांव तले रचना पाठ" के अंतर्गत साहित्य गोष्ठी सेंट्रल पार्क सेक्टर चार में सम्पन्न हुई। बच्चों द्वारा पढ़ी जाने वाली रचनाएँ मौलिक रहीं जिसमें पर्यावरण , देशभक्ति , माँ विषय प्रमुखता से रहे जबकि कुछ बाल रचनाएँ नवीन और सामयिक विषयों पर थी । उदीयमान बाल कवियों और कहा. निकारों द्वारा भृष्टाचार , कलाम और सामाजिक ताने बाने से जुड़ी रचनाएँ प्रभावित कर गईं जिनसे उनके भावी सृजन की दिशा स्पष्ट हुई।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रख्यात बाल साहित्यकार लेखक व प्रोफेसर दिविक रमेश ने बच्चों को लेखन की बारीकियों के साथ अपनी कहानी 'लूलू की सनक" को सुनाया वहीं बाल रचनाकारों को मौलिकता के साथ लेखन की टिप्स देते हुए उनको लीक से हट कर नए विषयों के चुनाव करने की बात वरिष्ठ बाल साहित्यकार व नेशनल बुक ट्रस्ट से संबन्धित श्री पंकज चतुर्वेदी ने कही। लोक जागृति संस्था की ओर बच्चो को लोक जागृति पत्रिका वितरित की गई। लोक जागृति के संस्थापक श्री संतोष मिश्रा द्वारा बाल मौलिक रचना पत्रिका में छापने के लिए आश्वा. सन दिया गया एवं "पेड़ों की छांव तले रचना पाठ" के प्रबंधन को धन्यवाद दिया गया। गोष्ठी के समापन पर आभार व्यक्त करते हुए इस गोस्ठी के संयोजक कवि लेखक अवधेश सिंह ने इस गोष्ठी की निरंतरता को बनाए रखने का अनुरोध करते हुए सबको धन्यवाद दिया । गोष्ठी का सफल संचालन लेखे समीक्षक रघुवीर शर्मा ने किया।

सभी बाल रचनाकारों को प्रमाण पत्र ,किताबों से भरे फोल्डर आदि देकर सम्मानित किया गया , इस अवसर पर परिंदे पत्रिका के ठाकुर प्रसाद चौबे , लोक जागृति पत्रिका के संपादक संतोष कुमार मिश्रा ,अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक संघ के लक्ष्मण सिंह, एडवोकेट विपिन शर्मा , शुभम अग्रहरी आदि की उपस्थिती उल्लेखनीय थी। (सं.)

क्षमा वीरों का गुण है।

पार्टी के प्रति समर्पित हैं सदानंद गौड़ा

सदानंद गौड़ा कर्नाटक के 20वें मुख्यमंत्री बने और वर्तमान में भारत सरकार में कानून और न्याय मंत्री हैं जो एक भारतीय राजनीतिज्ञ हैं।

गौड़ा को विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त है और फिर उन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त कर छात्र राजनीति में सक्रिय हो गया और लॉ कॉलेज के छात्रसंघ के महासचिव के रूप में निर्वाचित किया गया था। इसके बाद वह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के जिला महासचिव बने 1976 में, उन्होंने कानून का अभ्यास शुरू किया। वह उत्तर कन्नड़ जिले के सिरसी में एक संक्षिप्त अवधि के लिए एक सरकारी वकील रहे हैं। राजनीतिक कैरियर पर ध्यान केंद्रित करने के लिए उन्होंने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

केंद्रीय कानून मंत्री सदानंद गौड़ा के साथ लोक जागृति पत्रिका नवंबर अंक का अनावरण करते पत्रिका के सम्पादक संतोष मिश्रा।

जनसंघ के एक सदस्य के रूप में अपने राजनीतिक कैरियर की शुरुआत की। पार्टी के सुल्या विधानसभा क्षेत्र के अध्यक्ष बने। सदानंद गौड़ा दक्षिण कन्नड़ में पुत्तूर विधानसभा सीट से 1994 और 1999 में कर्नाटक विधान सभा के लिए चुने गए थे। विधायक के रूप में अपने दूसरे कार्यकाल में विपक्ष के उप नेता बन गए। इसके अलावा उन्होंने कर्नाटक राज्य विधायिका की विभिन्न समितियों में सेवा की है। 2003 में लोक लेखा समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्हें नामित किया गया।

उन्होंने 32,314 मतों के अंतर से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वीरप्पा मोइली को हराकर मंगलौर लोकसभा सीट से 2004 में 14वीं लोकसभा के लिए चुने गए थे।

2006 में, सदानंद गौड़ा कर्नाटक प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था। भाजपा मई 2008 में दक्षिण भारत में पहली बार के लिए एक विधानसभा चुनाव जीता।

सदानंद गौड़ा उनके संरक्षक येदियुरप्पा के इस्तीफे के बाद अगस्त 2011 में कर्नाटक के मुख्यमंत्री के रूप में चुना गया था। मुख्यमंत्री के रूप में, उन्होंने पार्टी की छवि को बेहतर बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। उन्होंने कहा कि सरकार के कार्यालयों पर समयबद्ध सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से इस तरह Sakaala के रूप में विभिन्न योजनाओं की शुरुआत की।

मई 2013 के चुनावों में बड़े नुकसान के बाद भाजपा कर्नाटक में विधान परिषद के विपक्ष के नेता के रूप में भी उन्हें चुना गया। 26 मई 2014 को, सदानंद गौड़ा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नव निर्वाचित सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ ली थी।

आदमी

बेशक जहाँ ये आसमान ना हो, ये ज़मी ना हो
पर ले चल मुझे वहाँ, जहाँ ये आदमी ना हो।

जहाँ इश्क हो सच्चा और उस पर कोई पहरा ना हो
जहाँ इंसानियत चीखती ना हो, इंसान बहरा ना हो
जहाँ चेहरे पे कोई और दूसरा चेहरा ना हो
अपनी असलियत छिपाना जहाँ लाज़मी ना हो

ले चल मुझे वहाँ जहाँ ये आदमी ना हो।

जहाँ सीधे सच्चे रिश्ते हो धोखे का डर ना हो
उस दुनिया मे जहाँ हवा में ऐसा ज़हर ना हो
राते सुलगती ना हो, झुलसती दोपहर ना हो
नब्ज़ भी चलती रहे और सांसे भी थमी ना हो

ले चल मुझे वहाँ जहाँ ये आदमी ना हो।

कुछ ना हो पर मेरा अपना ईमान मेरे साथ हो
इस भीड मे भी मेरी पहचान मेरे साथ हो
हालात कुछ भी बने मेरी मुस्कान मेरे साथ हो
जहाँ दुआ सलाम हो तो सिर्फ रस्मी ना हो

ले चल मुझे वहाँ जहाँ ये आदमी ना हो।

जिगर जलता ना हो नज़र झुकती ना हो
जिस्म टूटता ना हो रग दुखती ना हो
कदम बढते रहे, जिंदगी रुकती ना हो
हर चेहरे पर खुशी हो किसी आंख में नमी ना हो

ले चल मुझे वहाँ कि जहाँ ये आदमी ना हो

जहाँ कोई हमज़ुबान हो कोई हमखयाल हो
ना कोई जबाब हो ना कोई सवाल हो
ना कोई मालामाल हो ना कोई कंगाल हो
खुशहाल हो सभी किसी को कोई कमी ना हो

ले चल मुझे वहाँ कि जहाँ ये आदमी ना हो

सुदर्शन भदोला

व्यक्ति विशेष

समाज को अपना जीवन अर्पित कर दिया अशोक सिंघल ने

कपिल सिंघल

15 सितम्बर 1926 को आगरा में जन्में अशोक सिंघल के पिता एक सरकारी दफ्तर में कार्यरत थे। बाल अवस्था से लेकर युवावस्था तक अंग्रेज शासन को देख कर बड़े हुए और उसी दौरान वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) से जुड़ गये। 1942 में आरएसएस ज्वाइन करने के साथ–साथ उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। समाज को अपना जीवन समर्पित कर चुके सिंघल ने 1950 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से मटलर्जी साइंस में इंजीनियरिंग पूरी की। कक्षा 9 में ही जुड़ गये आरएसएस से घर के धार्मिक वातावरण के कारण उनके मन में बालपन से ही हिन्दू धर्म के प्रति प्रेम जाग्रत हो गया। उनके घर संन्यासी तथा धार्मिक विद्वान आते रहते थे। कक्षा नौ में उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी पढ़ी। उससे भारत के हर क्षेत्र में सन्तों की समृद्ध परम्परा एवं आध्यात्मिक शक्ति से उनका परिचय हुआ। 1942 में प्रयाग में पढ़ते समय प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) ने उनका सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से कराया। उन्होंने अशोक सिंघल की माता जी को संघ के बारे में बताया और संघ की प्रार्थना सुनायी। इससे माता जी ने अशोक सिंघल को शाखा जाने की अनुमति दे दी। इंजीनियर की नौकरी करने के बजाये उन्होंने समाज सेवा का मार्ग चुना और आगे चलकर आरएसएस के पूर्णकालिक प्रचारक बन गये। उन्होंने उत्तर प्रदेश और आस–पास की जगहों पर आरएसएस के लिये लंबे समय के लिये काम किया और फिर दिल्ली–हरियाणा में प्रांत प्रचारक बने। शास्त्रीय गायन में भी थे निपुण 1947 में देश विभाजन के समय कांग्रेसी नेता सत्ता प्राप्ति की खुशी मना रहे थे पर देशभक्तों के मन इस पीड़ा से सुलग रहे थे कि ऐसे सत्तालोलुप नेताओं के हाथ में देश का भविष्य क्या होगा? अशोक सिंघल भी उन युवकों में थे। अतः उन्होंने अपना जीवन संघ कार्य हेतु समर्पित करने का निश्चय कर लिया। बचपन से ही अशोक सिंघल की रुचि शास्त्रीय गायन में रही है। संघ के अनेक गीतों की लय उन्होंने ही बनायी है। 1948 में संघ पर प्रतिबन्ध लगा, तो अशोक सिंघल सत्याग्रह कर जेल गये। वहाँ से आकर उन्होंने बी.ई. अंतिम वर्ष की परीक्षा दी और प्रचारक बन गये। अशोक सिंघल की सरसंघचालक श्री गुरुजी से बहुत घनिष्ठता रही। प्रचारक जीवन में लम्बे समय तक वे कानपुर रहे। यहाँ उनका सम्पर्क श्री रामचन्द्र तिवारी नामक विद्वान से हुआ। वेदों के प्रति उनका ज्ञान विलक्षण था। अशोक सिंघल अपने जीवन में इन दोनों महापुरुषों का प्रभाव स्पष्टतः स्वीकार करते हैं। आपातकाल में सिंघल 1975 से 1977 तक देश में आपातकाल और संघ पर प्रतिबन्ध रहा। इस दौरान अशोक सिंघल इंदिरा गांधी की तानाशाही के विरुद्ध हुए संघर्ष में लोगा. को जुटाते रहे। आपातकाल के बाद वे दिल्ली के प्रान्त प्रचारक बनाये गये। 1981 में डा. कर्ण सिंह के नेतृत्व में दिल्ली में एक विराट हिन्दू सम्मेलन हुआ पर उसके पीछे शक्ति अशोक सिंघल और संघ की थी। उसके बाद अशोक सिंघल को विश्व हिन्दू परिषद् के काम में लगा दिया गया। इसके बाद परिषद के काम में धर्म जागरण, सेवा, संस्कृत, परावर्तन, गोरक्षा। आदि अनेक नये आयाम जुड़े। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है श्रीराम जन्मभूमि मंदिर आन्दोलन, जिससे परिषद का काम गाँव–गाँव तक पहुँच गया। इसने देश की सामाजिक और राजनीतिक दिशा बदल दी। भारतीय इतिहास में यह आन्दोलन एक मील का पत्थर है। आज विहिप की जो वैश्विक ख्याति है, उसमें अशोक सिंघल का योगदान सर्वाधिक है। 1992 का राम जन्म भूमि आंदोलन 1984 में दिल्ली के विज्ञान भवन में एक धर्म संसद का आयोजन किया गया। सिंघल इस के मुख्य संचालक थे। यहीं पर राम जन्म भूमि आंदोलन की रणनीति तय की गई। यहीं से सिंघल ने पूरा प्लान बनाना शुरू किया और कार सेवकों को अपने साथ जोड़ना शुरू किया। 1992 में बाबरी मस्जिद तोड़ने वाले कार सेवकों का नेतृत्व सिंघल ने ही किया था। सिंघल ने देश भर से 50 हजार कारसेवक जुटाये। सभी कारसेवकों ने राम जन्म भूमि पर राम मंदिर स्थापना करने की कसम देश की प्रमुख नदियों के किनारे खायी।

संकट के समय हर छोटी चीज मायने रखती है।

ज्योतिष परामर्श : ज्योतिष एक व्यवसाय के रुप में

आभा शर्मा
वारिष्ठ ज्योतिष
शोधकर्ता,
प्रबंधक केनरा बैंक,
कोण्डली दिल्ली

भारत की प्राचीन सभ्यता हमेशा ही अपनी महान वैचारिक एवं बौद्धिक सम्पदा के लिए विश्व में अपना विशेष स्थान रखने में सफल रही है। वैदिक, ज्योतिष, धमशग्रंथों और पुराणों में वर्णित भारत की ऊत्कृष्ट परंपरा और सनातन सत्य को विश्व ने हमेशा ही मानव कल्याण की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट श्रेणी में स्वीकार किया है। वैज्ञानिक धरातल पर प्रमाणित और सर्वशक्तिमान द्वारा प्रदत्त ईश्वरी ज्ञान के माध्यम से सामा. जिक सरोकार और मानव कल्याण के लिए कार्य करना ही ज्योतिष के रूप में प्रतिष्ठित होता है। मानव कल्याण में किसी ज्योतिषाचार्य के लिए इससे संतोषजनक व्यवसाय संभव नहीं है। ग्रहों की दशा एवं उनकी स्थिति के आधार पर संसार में होने वाली संभावित घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन ज्योतिष कहलाता है। उल्लेखनीय है कि भारत की सर्वोच्च न्यायालय ने दिनांक 4 नवम्बर 2003 को ज्योतिष के पक्ष में एक एतिहा. सिक निर्णय सुनाया था इस निर्णय के अनुसार ज्योतिष को मिथ्या प्रचार से दूर करते हुये इसे वैज्ञानिक विषय के रूप में स्वीकार किया गया। न्यायालय के निर्णय के अनुसार अब इसे विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। इस प्रकार ज्योतिष के खिलाफ दुष्प्रचार पर लगाम लगी है और देश विदेश तमाम नागरिक इसके प्रति आकर्षित हो रहे है। विश्व में लाखो करोड़ों लोग प्रतिष्ठित ज्योतिषाचार्यों से परामर्श का लाभ उठा रहे हैं। निसंदेह ज्योतिष अत्यधिक पवित्र एवं आध्यात्म से जुड़ा गहन वैज्ञानिक विषय हैं लेकिन कुछ लालची एवं लोभी लोगों द्वारा इस व्यवसाय को अपमानित किया जा रहा है। ऐसे लोग जब भी अपने अधकचरे ज्ञान से लोगों को धोखा देते हैं तो उस लालची व्यक्ति के साथ ज्योतिष जैसी निर्मल विद्या को भी अकारण अपमानित होना पड़ता है। हमे ऐसे लोगो से ज्योतिष को अलग करके देखना होगा। साधारणतया किसी व्यक्ति को कम से कम 5 से 10 वर्षों का समय चाहिए तब वह किसी एमबीबीएस डॉक्टर की तरह ज्योतिष का सही अभ्यास प्राप्त कर सकता है। ज्योतिष शास्त्रों में प्रसिद्ध श्लोक है :–

गणितेषु प्रवीणो यह शब्दशास्त्रे कृतश्रमः।
न्यायविद् बुद्धिमान देशदिक् कालग्यो जितेन्द्रियः।
उहापोहपटु होरास्कन्ध श्रवण समस्तः।
मैत्रेय स्त्याम याति तस्य वाक्यं न संशयः।

अर्थात किसी ज्योतिषाचार्य को इन विधाओं में पारंगत होना अपेक्षित है :–

1. गणित एवं व्याकरण पर मजबूत पकड़
2. न्याय एवं बौद्धिक विषयों में प्रवीण
3. भूगोल एवं समय सिद्धांतों में सिद्धस्त
4. अपनी इंद्रियों पर सम्पूर्ण नियंत्रण
5. तार्किक आधार पर सही और गलत समझने की क्षमता
6. होरा शास्त्र का समुचित ज्ञान

उक्त गुणों के होने पर हम किसी ज्योतिषाचार्य के बारे में कह सकते हैं कि उसकी गणना एवं भविष्यवाणी सैद्धांतिक रूप में सही होंगी।

महारिषी ने अपने प्रसिद्ध सनातन ग्रंथ ''बहुत पाराशर होराशास्त्र'' में कहा है कि ज्योतिष शास्त्र केवल उसी व्यक्ति को पढ़ना चाहिए/पढ़ाया जाना चाहिए जिनमें निम्न गुण हों।

1. पवित्र आत्मा – अच्छा व्यक्ति : जो ईमानदारी एवं सत्य के सहारे अपनी जीविका अर्जित करे।
2. ईश्वर भक्ति – जिसे प्रत्येक जीव में ईश्वर का अंश दिखाई दे।
3. शांत चित्त– जिसे क्रोध और आवेश पर नियंत्रण हो।
4. गुरु भक्ति – जो गुरुजनो का सम्मान करता हो। माता पिता की प्रथम गुरु के रूप में सम्मान करता हो
5. सत्य भाषण –जो परिहास में भी असत्य भाषण नहीं करता हो।

जन्मकुंडली के आधार पर भविष्यफल के आंकलन में कुंडली और अन्य विश्लेषणात्मक परिशिष्टों (16) का विश्लेषण किया जाता है। इन विश्लेषणों में 9 ग्रहों, 12 राशियों, 27 नक्षत्रों, 12 भागों (घरों) की सहायता ली जाती है। इनका न्यूनतम सम्मिश्रण इस प्रकार होगा (9.12.27.12=) 34,992. ज्योतिषचार्य को योगा के विभिन्न प्रभावों की जानकारी होनी चाहिए। उसे कम से कम दो दशा का उत्तम अभ्यास होना आवश्यक है। ऋषि पाराशर ने 55 दशा का वर्णन किया है और जैमिनी ऋषि ने कुल लगभग 44 दशा का वर्णन किया है तत्पश्चात उसे 9 ग्रहों के परिवर्तन के आधार पर अपनी भविष्यवाणी करनी चाहिए।

● **सही शिक्षा और क्षेत्र के चुनाव में परामर्शदाता :** इंटरनेट एवं वैश्वीकरण की वजह से बहुत सी जानकारी इधर उधर मिल जाती है। विद्यार्थी अकसर भ्रमित हो जाते हैं कि क्या चुने। किस क्षेत्र में शिक्षा अर्थात टेक्निकल, सेमी टेक्निकल या गैर राजनीतिक (इंजीनियरिपग ६ मेंडिकल डिग्री, डिप्लोमा अथवा कानून, कला, गायन या अन्य क्षेत्रों में डिग्री या डिप्लोमा) ऐसा व्यक्ति जो संगीत और विज्ञान में समान रूप से प्रवीण है, हो सकता है कि वह भी भ्रमित रहे कि किस दिशा मे जाए।

● **व्यवसाय के लिए परामर्शदाता :** एक अच्छा परामर्शदाता सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्रों में विभिन्न व्यवसायों के लिए अपना महत्वपूर्ण परामर्श दे सकता है। सेवा क्षेत्रों में, मीडिया, विज्ञापन , रीटेल, टेलीकॉम, आईटी, बैंकिंग, इंश्योरेंस, मार्केटिंग, मनोरंजन उद्योग, उत्पादन आदि क्षेत्रों में परामर्शदाता की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। किस वस्तु का व्यापार करे, किस दिशा में या किस स्थान पर करें इत्यादि प्रश्नों पर भी परामर्शदाता के लिए अनेक संभावनाएं हैं।

● **वैवाहिक विषयों के लिए परामर्शदाता :** एक परामर्शदाता इन सभी सवालों के जवाब दे सकता है जैसे विवाह कब होगा, अविवाहित दशा तो नहीं है, प्रेम विवाह का योग है या परंपरागत विवाह होना है। अलगाव, तलाक ? दूसरे विवाह की संभवनायें ? वैवाहिक सुख या अन्यथा।

● लोगों को उनकी शक्ति एवं कमजोरियों के बारे में जानक. ारी देने के लिए सामान्य परामर्शदाता।

● सामान्य परामर्शदाता के रूप में लोगों को उनकी छुपी शक्तियों का एहसास जैसे वे योजनाकार हैं या कार्यान्वयन कर्ता। कोई पहल करने वाला होता है या बुद्धिमत्ता पूर्ण निर्णय लेने में सक्षम। परामर्शदाता को हर संभव प्रयास करना है कि जीवन में कैसे सुधार हो, कैसे एक नवीन राह खुले और लोगो की प्रगति हो।

पुत्ररत्न

आचार्य गजाधर जाने माने प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। दूर–दूर तक उनका नाम था। तंत्र मंत्र, जोतिष विज्ञान, और कर्मकाण्ड मे उनके जैसा कोई नहीं था। लोग उनसे पूजा पाठ के अलावा और महत्वपूर्ण सलाह भी लेने आते थे। गांव से जुडी हुई कोई भी समस्या होती थी उसका निदान आचार्य जी के ही यहा आकर होता था। घर मे कोई कमी न थी। घर मे अनाज के भंडार हमेशा भरे रहते। मेहमानों, सरकारी कारिंदो, और मांगने वालो का आना जाना लगा रहता था और हर एक उनके घर से संतुष्ट होकर जाता था लेकिन फिर भी अन्न के भन्डार मे कोई कमी नही होती थी। अन्नपूर्णा की विशेष कृपा थी उन पर।

घर पर आचार्य जी की एक बूढी मां थी। सीधी सादी पहाडी औरत थी। धार्मिक प्रवृति उनके रोम रोम मे बसी हुई थी। घर मे धन धान्य, वैभव, अन्न की कोई कमी नहीं थी। और ना ही मान, मर्यादा और प्रतिष्ठा मे कोई कमी थी। लेकिन कमी थी तो एक पुत्र की उनकी पांच पुत्रियां थी। उनका विवाह जल्दी इक्कीस वर्ष की आयु मे हो गया था। तब उनकी पत्नी सुमित्रा की उम्र मात्र सत्रह साल की थी। धीरे धीरे समय बीता और पुत्र की आशा मे वो पांच कन्याओ के पिता बन गये।

एक दिन देवधर शाम को घर लौटे। आज बहुत थक गये थे। तीन दिन से घर पर नहीं थे। कुछ मील की दूरी पर उनके एक यजमान के पुत्र का विवाह था और सारे पूजा पाठ का भार उन्ही पर था। गणेश पूजन से लेकर बहू के गृह प्रवेश तक विवाह सम्पन्न होने मे तीन दिन का समय लग ही गया। परंतु उनके यजमान ने उनकी खूब आव भगत और आदर सत्कार किया और अच्छी दान दक्षिणा देकर उनको विदा किया लकिन वो थक तो गये ही थे और आते ही बैठ्क मे बैठे तो सुमित्रा ने उनको पानी लाकर दिया और बोली लगता है आप आज बहुत थक गये हैं। आप हाथ मुह धो लीजिये मैं चाय बना लाती हूँ फिर समय पर भोजन करके आप आराम करे। पंडित जी ने सिर हिलाकर हामी भरी और सुमित्रा वहाँ से चली गयी।

तभी उनकी माता जी वहा पहुंची और बोली आ गये गजाधर। गजाधर ने कहा हाँ आ गया। लेकिन बहुत थक गया हू। उनकी मां तो उनसे बोली तुम खाना खाकर आराम करो तुम से एक बात करनी है कल कर लेंगे। आचार्य जी ने मां के आदेश पर सहज हामी भरी और कहा अगर बात बहुत आवश्यक नही है मां तो ठीक है। मां बोली ऐसा कुछ नही है कल बात कर लेंगे

चाय की प्याली को सामने पडी मेज पर रखते हुये सुमित्रा बोली चाय पी लीजिये, थकावट मिट जाएगी? अचार्य जी बोले हाँ अब विश्राम के बाद कुछ तरोताजा महसूस कर रहा हूँ। मां उठ गयी क्या? उनको चाय दे दी कि नहीं? सुमत्रा ने जवाब दिया हाँ उनको पहले चाय देकर आ रही हूँ। थोड़ी देर के बाद नित्य क्रियाओ से निवृत हो कर, नहा धोकर अपने कमरे मे आये तो देखा मां बैठी हैं। वो भी वहाँ पर आकर बैठ गये और मां से बाते करने लगे। अचानक उनको याद आया कि कल मां कुछ बात करना चाहती हैं। उन्होंने कहा मां क्या बात है कल तुम कुछ कहना चाहती थी। मां ने एक लम्बी सांस छोड़कर कहा हाँ गजा मैं तुमसे कुछ कह्ना चाहती हूँ। क्या कभी सोचा है ? इस जमीन, जायदाद, इस ब्राह्मण वृति का क्या होगा? आचार्य जी कुछ गम्भीर होते हुये बोले। मैं समझा नही मां तुम क्या कहना चाहती हो? मां ने कहा देखो तुम्हारी पांच बेटिया हैं। सभी एक से बढ़कर एक हैं। रूपवती हैं, गुणवती हैं और तुमने और सुमित्रा ने उनको अच्छे संस्कार भी दिये हैं। लेकिन फिर भी गजाधर वंश कन्याओ से नहीं चलता। आखिर इस जमीन जायदाद, इस वैभव, कुल मर्यादा का कोई तो रखवाला होना चाहिये। कन्याये तो कल अपने अपने घर चली जायेंगी फिर तुम्हारी, सुमित्रा की, इस घर की, इस वंश की रक्षा कौन करेगा। कौन तुम्हारे बुढापे का सहारा होगा? कुल दीपक पुत्र ही होता है। कन्याये तो मनमोहक जुगनुओ की तरह हैं कुछ

स्वस्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन है, वफादारी सबसे बड़ा सम्बन्ध है।

देर चम चम प्रकाश तो कर देती हैं लेकिन फिर कही विलीन हो जाती हैं परंतु पुत्र ही उस सूर्य के समान है जिसके प्रकाश मे हमारा भूतकाल, वर्तमान और भविष्य प्रकाशमय रहता है।

अचार्य जी ने मां की ये बाते सुनी तो हतप्रभ रह गये। फिर आज मां ने ऐसी बात क्यो की वो यह समझ नही पा रहे थे। फिर उन्होने सोचा कि मां पुराने खयालात की है तो शायद ऐसा सोचती है। और फिर हर मां की ये अभिलाषा होती है कि वो पोते का मुह देखे। शायद यह वही अभिलाषा है जो बाहर निकलकर प्रकट हुई है।

मां शायद एक पुत्र की चाह मे ही मे पांच बेटियो का पिता बन गया। लेकिन जो भाग्य और विधाता को मंजूर हो उस पर तो किसी का वश नहीं। अगर मेरे भाग्य मे पुत्र का सुख नहीं है तो मैं क्या कर सकता हूँ।

मां बोली गजाधर मैं पुत्रियो की बात नहीं कर रही हूँ। मैं पुत्र की बात कर रही हूँ। इस घर को एक बेटे की जरूरत है। क्या सोचा है तुम्हारे बाद कौन इस घर का कुल दीपक होगा। अगर कोई नहीं रहा तो फिर कौन इस कुल का नाम लेने वाला रहेगा। क्या ये वंशवृक्ष तुम्ही पर आकर समाप्त हो जायेगा। क्या एक दिन ये पुरखो का बनाया इतना बडा मकान बिना वारिस के जर्जर हो कर गिर जाएगा।

वैसे तो तुम से बढ़कर इस समय दूर दूर तक कोई ज्योतिष विद्या का जानकार नहीं। कल तुम्हारी और सुमित्रा की जन्मपत्री रामप्रसाद शास्त्री जी को दिखाई थी और उन्होने कहा कि तुम्हारे भाग्य मे पुत्र योग है। इस घर के आंगन मे बालक जरूर खेलेगा। लेकिन जब तुम दूसरा विवाह करो तब। शास्त्री जी कह रहे थे कि सुमित्रा से तुमको पुत्र प्राप्त नहीं हो सकता। उसके लिये तुमको किसी दूसरी स्त्री से विवाह करना पडेगा। यही एकमात्र उपाय है इस घर के आंगन मे एक बालक खेले।

अचार्य जी मां की बात सुनकर सन्न रह गये। कुछ क्षणो तक उनको अपने कानो पर भरोसा नहीं हुआ। वो ये तो समझते थे कि मां एक पोते का मुह देखना चाहती है मगर ये नही जानते थे कि उसके लिये मां दूसरे विवाह जैसा प्रस्ताव करेंगी। वो कभी भी ये नहीं सोच सकते थे कि वो एक पुत्र की चाह मे अपनी अर्धांगनी से विमुख हो जायेंगे। सुमित्रा उनके रोम रोम मे बसी थी। सुमित्रा के अलावा वो किसी और स्त्री के बारे मे इस प्रकार का विचारमन मे लाना भी पाप समझते थे।

मां ये कहती हुई चली गयी कि गजाधर अब तुमको दूसरा विवाह करना ही होगा। इस घर को एक पुत्ररत्न चाहिये। और तुम्हारी जन्मकुण्ड्ली के सभी ग्रह यही कहते हैं कि यह सुमित्रा के भाग मे नहीं है उसके लिये तुमको दूसरा विवाह करना ही पडेगा। पंडित जी ने ये भी कहा है कि उनकी नजर में एक ऐसी कन्या है अगर कहो तो बात चलाऊ? और मां वहा से चली गई।

इस बात को लगभग दस दिन का समय गुजर गया। अचार्य जी अब गुमसुम से रहने लगे। ये बात उनको हर समय खाये जाती कि वो करे तो क्या करे? एक तरफ कुल के वंश और मां का प्रश्न है तो दूसरी तरफ सुमित्रा का निश्चल प्रेम। ये चिंता उनको चैन नहीं लेने देती कि सुमित्रा क्या सोचेगी कि क्या ये प्रेम झूठा था। अगर मेरी कोख से पुत्र नहीं जन्मा तो क्या इस घर में मेरा कोई स्थान और सम्मान नहीं? सुमित्रा उनसे रोज पूछ्ती लेकिन वो या तो टाल देते या मौन साध लेते।

कुछ दिन और बीते तो एक दिन फिर मां ने प्रश्न किया फिर क्या सोचा है गजा? क्या पंडित जी से कहू कि बात चलाये। अच्छे घर का रिश्ता है। मां बाप गरीब थे और जल्दी ही दोनो चल भी बसे। उस लड्की को चाचा ने पाला और अच्छे संसकार भी दिये। लेकिन चाचा भी अपनी गरीबी में उसका विवाह नहीं कर पाया और थोडा उम्र बढ़ गई तो विवाह नहीं हो पाया। तुम से दस ही साल छोटी है और अपनी ही जात की ब्राह्मण भी है।

गजाधर बोले मां ऐसा ना कहो। मेरे लिये ये मुश्किल होगा। मै सुमित्रा को ये नहीं कह पाऊंगा। मैं उसके ह्रद्य पर शूल नहीं चुभा सकता। आज जमाना बहुत आगे बढ गया है। पुत्र–पुत्री मे कोई भेद नहीं है। जिसने अपने जीवन के इक्कीस वर्ष मेरे साथ बिताये उसको मै कैसे कह दू कि अब इस घर मे तुम्हारा कोई स्थान नहीं है। मां समझ गई, गजाधर उनके पुत्र थे। वो उनके स्वभाव को अच्छी तरह से जानते थे। वो खुद भी सुमित्रा को पुत्री की ही तरह मानती थी। फिर बोली गजा ये किसने कहा कि सुमित्रा का यहा कोई स्थान ना होगा। वो उसी अधिकार से यहाँ रहेंगी। तुम चिंता ना करो मैं उससे बात करूंगी। बल्कि उसको बडी बहन का भी अधिकार मिल जायेगा। और क्यो व्याकुल होते हो मैं हूँ ना सब सम्भाल लूंगी। तुम इस विषय मे शंका ना करो। बस हम बहुत सूक्ष्म और साधारणता से तुम्हारे दूसरे विवाह को समपन्न करेंगे। मैं सुमित्रा को समझाऊंगी वो पुत्र उसका भी तो होगा। उसका अधिकार तो उस पर सबसे अधिक होगा। क्योंकि उसका बलिदान सबसे बडा होगा। लेकिन बडी मां तो सदैव वही रहेगी। मैं जानती हूँ तुम्हारे लिये और इस घर के लिये वो किसी भी बलिदान के लिये पीछे नहीं हटेगी। तुम चुप रहना अब मै ही उससे बात करूंगी।

इस घटना के तीन महीने बाद नई दुल्हन अचार्य जी के घर आ गयी। साधारण से रूप रंग वाली शांति सचमुच अपने ही नाम की तरह शांत स्वभाव की थी। वो जानती थी वो एक ऐसे आदमी से व्याही जा रही है जो उम्र मे उससे बहुत बडा है। जिसका पह्ले ही एक भरा पूरा परिवार है और ये विवाह उस विवाह की तरह नहीं है जिसमे सपनो को पंख लग जाते हैं। जिसमे भविष्य के महल बनते हैं। जिसमे आने वाली मधुर मिलन वेला का इंतिजार होता है। गरीब बाप की बेटी थी तो हर हाल मे जीने का अनुभव भी था उसको। शायद हालात ने बहुत शांत बना दिया था उसको।

सुमित्रा समझदार थी। जानती थी कि अगर मैं शांति के साथ ठीक ना रही तो घर को नर्क बनने में देर ना लगेगी। उसको अचार्य जी के साथ साथ अपनी पांचो पुत्रियो के भविष्य की भी चिंता थी। वो जानती थी कि अगर घर का माहौल बिगडेगा तो ये किसी के लिये भी उचित नहीं होगा। वो शांति को अपनी छोटी बहन की तरह रखेगी इसी मे सबका भला है। धीरे धीरे वो दोनो सचमुच बहनो की तरह रहने लगी। इसका सबसे बडा लाभ ये हुआ कि घर कलह की आग से बच गया। अचार्य जी भी निश्चिंत हो गये और सुमित्रा का कद उनकी निगाह मे और बढ गया। किसी घर मे अगर स्वर्ग और नर्क का फर्क देखना हो तो उस घर की स्त्रियो का आपस का व्यवहार देख लीजिये स्वर्ग नर्क भेद पता चल जायेगा।

इसी तरह जीवन चलता रहा। ईश्वर की दोहरी कृपा हुयी। सुमित्रा और शांति दोनो ही गर्भवती हो गयी। नई दुल्हन का खूब ध्यान रखा जाने लगा। सभी जानते थे कि ज्योतिषी जी ने कहा है कि शांति का पुत्र होगा। उसके लिये महरी को खास हिदायत दे दी गयी कि खान पान मे, आराम मे कोई कमी ना हो। शांति को कोई भी काम ना करने दिया जाये। कुछ स्त्रिया हमेशा उसके पास रहे वो कभी भी अकेली ना हो। डाक्टर साहब भी समय पर आते और उसको देख जाते। अचार्यजी की मां ने अपना सोने का बिस्तरा भी शांति के पास ही लगा लिया और

उसका खुद भी पूरा ध्यान रखने लगी। उसके गर्भ मे उनके कुल का चिराग जो पल रहा था। घी, दूध, फल किसी भी बात की कमी न थी शांति के लिये।

उधर सुमित्रा भी गर्भ से थी लेकिन उसकी कोई सुध लेने वाला ना था। वो चुपचाप अपने कमरे मे बिस्तरे पर पडी रहती। बेटिया आ जाती और उसको पानी खाना दे जाती। फिर वो उनके साथ ही अपना समय बिताती। अचार्य जी की मां तो ये भी भूल गयी थी कि उनकी दूसरी बहू भी इस घर मे है और वो भी गर्भवती है। उनको तो बस सिर्फ और सिर्फ शांति ही दिखती थी या यो कहिये शांति के भीतर उनको अपना वंश दिखता था।

शायद भगवान को कुछ और ही मंजूर था। उसकी माया वो ही जाने। इंसान क्या सोचता है इससे कोई फर्क नहीं पड्ता। भगवान की जो इच्छा हो होता वही है। शांति ने पहले संतान को जन्म दिया लेकिन पुत्र नहीं एक पुत्री को। आचार्य जी की मां के पैरो के नीचे से तो जैसे जमीन ही निकल गई।

ठीक एक महीने के बाद सुमित्रा की भी संतान हुई। लेकिन उसने इस बार पुत्र को जन्म दिया। आचार्य जी के घर में कुल दीपक का आगमन हो गया। लेकिन वैसे नहीं जैसे उम्मीद की जा रही थी। पुत्र की आशा शांति से थी लेकिन उस आशा को फलीभूत सुमित्रा की कोख ने कर दिया। आचार्य जी की मां की खुशी का अब कोई ठिकाना ना रहा। उनकी इच्छा पूर्ण हो गयी। बीमार को जैसे ठीक होने से मतलब होता है चाहे दवा और चिकित्सक कोई भी हो। उनको पोता मिल गया था चाहे कोख सुमित्रा की हो या शांति की। घर में खूब खुशिया मनाई गयी। गरीब दृगुरबो को दान दिया गया। सारे गांव में उसके नामकरण पर भोज दिया गया। उत्सव का माहौल था और हर एक प्रसन्न था। शांति और सुमित्रा भी प्रसन्न थी। इस घर में एक चिराग जो आ गया था।

धीरे धीरे समय बीता। आचार्य जी के यहाँ पुत्र को जन्में भी आज बीस बरस बीत गये हैं। मां अब चल बसी हैं। आचार्य जी भी अब बूढे हो चले हैं। सुमित्रा और शांति दोनो छोटी और बडी बहनो की तरह रहती हैं। वो भी अब बूढी हैं लेकिन एक दूसरे से स्नेह रखती हैं। आचार्य जी की पांचो पुत्रियो का विवाह हो चुका है। सारी कन्याएं अपने अपने घरो में खुश हैं। सभी अच्छे और कुलीन परिवार में गयी हैं। किसी को कोई कमी नहीं है।

लेकिन अगर कोई कमी है तो ये कि आचार्य जी का पुत्र अब उनके साथ नहीं है। आज ना जाने वो कहाँ है। तीन साल पहले अचानक घर छोड्कर कही चला गया। गलत साथियो की संगत में तो वो पहले ही पड़ गया था और धीरे धीरे ऐसे काम भी करने लगा कि कुल की मान–मर्यादा और प्रतिष्ठा भी जाती रही। जुआ खेलता, और जब पैसे नहीं होते तो चोरी करता नहीं तो दादागिरी से छीना झपटी करता। बलिष्ठ था तो लोग डरते भी थे और आचार्य जी का सम्मान करते थे तो कुछ कहते भी नहीं। लेकिन ये सिलसिला भी कब तक चलता। धीरे धीरे पूरे इलाके में वो बद्नाम हो गया। अब तो ये भी सुना जाने लगा कि वो शराब पीकर पर स्त्रियो के संसर्ग में भी जाने लगा।

जब ये बाते आचार्य जी के कानो में पडी तो पह्ले पहल उनको भरोसा नहीं हुआ लेकिन जैसे खुश्बू नहीं छिप सकती वैसे ही बद्बू भी नहीं छिपती है। अब रोज रोज ही किसी ना किसी बात पर आचार्य जी को शर्मिंदा होना पड्ता। गांव में ही नहीं आस–पास से भी शिकायते आने लगी। जीना दूभर हो गया। घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया। कुल दीपक घर को जलाने लगा था। वो और उनकी दोनो पत्नियां अब बूढ़ी हो चली थी तो देह से भी इस रोज रोज की आत्मग्लानि से क्षीण होने लगे। कल तक जो लोग सिर झुकाये अदब से खडे रह्ते थे आज शिकाय्त करते या फिर तकाजे करने लगे थे।

जब जीना दूभर हो गया और प्रतिदिन कुल और परिवार की प्रतिष्ठा प्रतिदिन पुत्ररत्न के कारण तार तार होने लगी तो एक दिन आचार्य जी ने उससे कह दिया कि वो ये घर छोड कर कही चला जाये। उसको बहुत समझाया गया लेकिन वो अब व्यभिचार में इतना डूब चुका था कि इधर से सुनता और उधर से निकाल देता। कुल की मर्यादा का रक्षक उसका भक्षक बन चुका था। कुल का भविष्य कुल के भूतकाल और वर्तमान को भी धूलिधूसरित करने लगा था। अब कोई मार्ग नहीं बचा था कि उससे सारे सम्बन्ध तोड दिये जाये और बची खुची प्रतिष्ठा को किसी तरह समेट लिया जाये। अचार्य जी ने भी यही किया और उससे सारे सम्बन्ध तोड्कर उसको घर से चले जाने का हुक्म दिया।

आज इस बात को भी तीन साल बीत गये हैं। पता नहीं वो कहाँ है। उसके बारे में कई कहानिया प्रचलित हैं कोई कह्ता है वो किसी के कत्ल के जुर्म में पकडा गया और जेल में है तो कोई कहता कि घर से भागकर उसने एक गिरोह बनाया और बडी बडी डकैतियो को अंजाम देने लगा, फिर एक दिन पुलिस के साथ मुठ्भेड में मारा गया। सत्य क्या है कोई नहीं जानता। हाँ लेकिन ये सत्य है कि वो जिस दिन से इस घर से गया उसका इस घर से कोई संपर्क नहीं है और ना ही उसके बारे में कोई जानता ही है। और ना ही इस घर में कोई उसका इंतजार ही करता है सब उसे कोसते हैं और उसकी दोनो माताये और अचार्य जी इस बुढापे में उसके होने ना होने का दुख मनाते हैं। सचमुच कुल को कलंकित करने वाली संतान के दुख से बडा दुख इस संसार में कोई नहीं है।

उससे एक महीना पह्ले जन्मी उसकी बहन रश्मि ने विवाह नही किया है। पुत्र की अभिलाशा में शांति की कोख से पैदा हुई रश्मि ही बूढे मां बाप का सहारा है। बुढापे की लाठी है। पूरे घर को देखती है। आचार्य जी उसे देखते हैं तो कसमसाकर रह जाते हैं। उसके लिये कई बार वर देख चुके हैं पर रश्मि है कि कहती है ना बाबा मैं विवाह नहीं करूंगी। मैं आपकी पुत्री नहीं पुत्र हूँ। अगर भाई यहाँ होता तो शायद मैं विचार भी करती मगर अब ये सम्भव नहीं है। मैंने अपने जीवन का ध्येय अब आपकी सेवा बना लिया है। वो उन तीनो का बहुत ख्याल रखती है। सारे गांव के लोग भी उसका गुणगान करते हैं। लोग कहते हैं कि ऐसी पुत्री अगर किसी को मिल जाये तो फिर किसी का पुत्र हो या ना होक्या अंतर पड्ता है। वो कुल मर्यादा का निर्वाह करती है। अपने बूढे मां बाप का ध्यान रखती है। अपनी प्रतिष्ठा के साथ जीती है और उस पर कोई आंच ना आये इसका भी ध्यान रखती है। वही कुल दीपक है, वही वही विश्वास है, वही मां बाप की आस है और वही असली पुत्ररत्न है।

सुदर्शन भदोला

अवसर के बिना काबिलियत कुछ भी नहीं है।

बिना कंप्लीशन सर्टिफिकेट के चल रहा अंसल प्लाजा

गाजियाबाद के वैशाली में अंसल प्लाजा बिना पूर्णतः प्रमाण पत्र के शासन एवं प्रशासन की मिली भगत से कई सिनेमा हॉल एवं शोरूम चला रहा है। GDA के भवन निर्माण एवं विकास उपविधि –2008 के अध्याय –3 , के पैरा 3.1.2 उप क्लाज XI की खुले आम अवहेलना भी हो रही है। इसी के सामने नाला है जिसमे इंडस्ट्रियल एरिया का खतरनाक कचरा आता है लेकिन प्रदूषण बोर्ड के अधिकारी कोई कार्यवाही नहीं करते। वैशाली सेक्टर १ व ३ के लोगो का जीना मुश्किल हो रखा है। लोगों का एयर कंडीशन, फ्रीज, टीवी, आये दिन खराब होते हैं। मनुष्य के शरीर को कितना नुकसान होता होगा। नगरनिगम के तो कहने ही क्या है ? हमारे क्षेत्र के तमाम लोग इसे पत्रिका में लिखने के लिए कहते हैं लेकिन अब तो पत्र पत्रिका एवम पेपर की खबरों का असर शासन प्रशासन पर होता ही नहीं। यह तो न्यायालय के आदेशों तक की अवमानना करते रहते हैं। देश के उच्चतम न्यायालय ने यह आदेश दे रखा है कि सरकारी जमीन पर कोई भी निर्माण मंदिर मस्जिद व गुरुद्वारे के नाम पर नहीं होगा, लेकिन वसुंधरा एवं इंदिरापुरम की नहर के किनारे कई मंदिर एवं गुरुद्वारे और अन्य तरह से अवैध निर्माण हो रखा है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा एसपी बनर्जी बनाम उत्तर प्रदेश के केस में दिए गए निर्णय की अवमानना सरेआम हो रही है।

अंसल प्लाजा चल रहा, बन रहा और बिक भी रहा है...

अंसल प्लाजा पहले दो मंजिला

अंसल प्लाजा अब तीन मंजिला

गाजियाबाद एवं नोएडा में पर्यावरण नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही

दिल्ली में प्रदूषण के लिये दिल्ली प्रदेश के अलावा एनसीआर का वातावरण भी जिम्मेदार है। गाजियाबाद एवम नोएडा में पर्यावरण नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही है। हाल की रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि दिल्ली से ज्यादा प्रदूषण नोएडा में पाया गया है। उत्तर प्रदेश वन नीति के अनुसार पेड़ लगाने की जो व्यवस्था है उसका पालन नहीं हो रहा है मकान बनाने के समय शपथ पत्र दे दिया जाता है उसके बाद न तो प्रशासन और न विकास प्रधिकरण कुछ देखता हैं इस एरिया को कंक्रीट का जंगल बना दिया गया है। गाजियाबाद एवं नोएडा में 4 से 6 घण्टा लाइट का कट रहता है, उस समय जेनरेटर चलते हैं इससे भारी मात्र में प्रदूषण फैलता है। हरित प्राधिकरण ने कई आदेश दिए लेकिन सब बेकार साबित हुए। ग्रीन वेल्ट के समबन्ध में एक कमिटी भी बनाई लेकिन जमीनी स्तर पर कोई सुधार नहीं हुआ। प्रभावशाली लोग ग्रीन बेल्ट पर कब्जा कर रखे है। सीवर सिस्टम फेल हो चूका है। जीडीए के भवन निर्माण एवं विकास उपविधि –2008 के अध्याय –3 , के पैरा 3.1.2 उप क्लाज XI की खुले आम अवहेलना हो रही है। आबादी कई गुना बढ़ गई है। प्रदूषण का एक और जो सबसे बड़ा कारण है वह है पालीथीन लेकिन सरकार इस पर पूरी तरह प्रतिबंध नहीं लगा पा रही है। प्रदूषण रोकने में सरकार की इच्छा शक्ति की कमी है। आप सभी लोगों को पता होगा कि सरकार द्वारा बारिश के पहले ज्यादातर नदियों की सफाई की जाती है जबकि बारिश में नदियां अपने आप साफ हो जाती हैं लेकिन शासन, प्रशासन द्वारा नदियों की सफाई न करके हाथ की सफाई की जाती है और मिली भगत करके नोट कमाए जाते है।

बिना जोखिम कुछ नहीं मिलता, और जोखिम वही उठाते हैं जो साहसी होते हैं ।

Education Solution®

Aspiring young minds...

Save your year. Enroll for classes Xth & XIIth today in "NIOS" board. Value equivalent as CBSE board

Abacus Classes also Available

Syllabus left ? Confused ? Don't be disappointed. Complete your syllabus in 3 months. Other course completion packages are also available.

ACADEMIC COACHING

Ist - VIIIth	XIth - XIIth	B.Com, B.A., B.Sc
MATHS SCIENCE, ENGLISH HINDI, S.ST.	MATHS PHYSICS, CHEMISTRY BIOLOGY ENGLISH, ACCOUNT ECONOMICS B.St, C++, I.P.	ACCOUNT, ECONOMICS MATHS INCOME TAX CORP. ACCOUNTING BUSINESS LAW COST ACCOUNTING
IXst - Xth MATHS SCIENCE, ENGLISH HINDI, S.ST.		

PROFESSIONAL COACHING

B.Tech, MBBS	CA,CPT,CS,ICWA	BBA, MBA
IIT-JEE, BITSAT CPMT, UPTECH	CA, CPT, IPCC CS (Foundation) CS (Executive) CMA (Foundation) CMA (Inter Mediate)	INCOME TAX, COST ACCOUNTING FINANCIAL MANAGEMENT CORPORATE ACCOUNTING FINANCIAL ACCOUNTING BUSINESS LAW
Competitive Exam POLYTECHNIC, BANK-ENTRANCE, UPSE, SSC SPOKEN ENGLISH, ETC.		

Head Office : Plot No. 420, Sector-5, Vaishali, Gzb., Behind Shopprix Mall
B.O. : House No. 634, Niti Khand-1, Indirapuram, Gzb., Near Swarn Jayanti Park
B.O.: C-1401, Arunima Palace, Sector-4, Vasundhara, Gzb., Behind Amity School

M.: 9999907099, 9711787429, 9911932244

educationsolutionvep@gmail.com www.educationsolution.co

बहादुर और बुद्धिमान व्यक्ति अपना मार्ग स्वयं तलाश लेते हैं।

Abdul

Mob.: 9958303234
8447086805
9971533091

COLLECTION
Pehnawa

आवश्यकता है : कुशल लेडिज की बुटीक हेतु

Unique Designer Ladies Suits
Dress Material & Tailoring

D-2, R.K. TOWER, SECTOR-IV, VAISHALI, GHAZIABAD

प्रो. रोहित
प्रो. सतीश कुमार

9953265282
8860072047

जय बाबा मोहनराम फायर वर्क्स

हमारे यहां शादी-विवाह, जन्मदिन, दीपावली, दशहरा एवं
अन्य शुभ अवसर पर आतिशबाजी का विशेष प्रबंध है।

फर्रुखनगर, निकट पुरानी पुलिस चौकी, जिला गाजियाबाद, उ.प्र.

Contact: 9716939212
0120-4118836

GADGETY

SHUBHI TECHNOLOGIES

REPAIR ALL TYPE OF MOBILE, TABLET
& COMPUTER, LAPTOP
ALL ACCESSORIES AVAILABLE
RECHARGE AVAILABLE & DTH, VIDEOCON

SHOP No.1, Plot No. 290, Sector-4, Vaishali, Ghaziabad, U.P., 201012

(गुलावटी वाले) (रजि०)

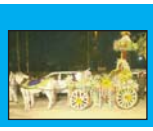

9810982490
9810082490

Gupta Band

हमारे यहां घोड़ी, बग्गी, ट्यूब लाईट, बैण्ड, झूमर लाईट हर समय तैयार मिलती है

H.O. : Plot No. 275, Opp. Milan Garden, Sec-4, Vaishali, Gzb. 201010
B.O. : Plot No. 461, SecA4, Near Club Five, Vaishali, Gzb, 201010
Off: DPS Road, Kanwali Ki Pulia, Indirapuram, Gzb.
Email: info@guptaband.com, manish@guptaband.com

Website : guptaband.com

Women Empowerment

GharSeNaukri.com
Online Job Portal Only for Women

www.GharSeNaukri.com

JOBS

Work From Home
and Part Time Jobs

Skill Development
Programs

Business
Entrepreneurship

Ghar Se Naukri.com™

Customer Care 8802360360
Call for Business Opportunity 9871397561
info@gharsenaukri.com

RNI NO.UPHIN/2011/39809

This is the space for Terms and Conditions which is mandatory for every emailer. Please provide the text for it... This is the space for Terms and Conditions which is mandatory for every emailer.

Lok Jagriti
PRESS

INVITES YOU
TO
ACUITY EVENT - II, NEW DELHI 2015
On
"GOVERNMENT & GOVERNANCE"
Saturday, 12th December 2015
(12 Noon to 4 PM)
Including :- High Tea
Entry Free !!
For online nomination please visit— www.acuitymulti.com/Event.aspx

Venue
Mavlankar Hall, Constitution Club of India,
Rafi Marg, Near Patel Chowk Metro Station, New Delhi-01

For more Detail
www.acuitymulti.com/Event.aspx
Mail ID :- saurabh.pandey@icai.org
Call on : - 99101-34307, 88604-84566